वर्ष-15, अंक-02 वि.सं. 2076, युगाब्द 5121 अप्रैल 2019 मूल्य : 20.00
सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/- आजीवन : रु. 2000/- वार्षिक : रु. 200/-

मासिक पत्रिका

सेवा संवाद

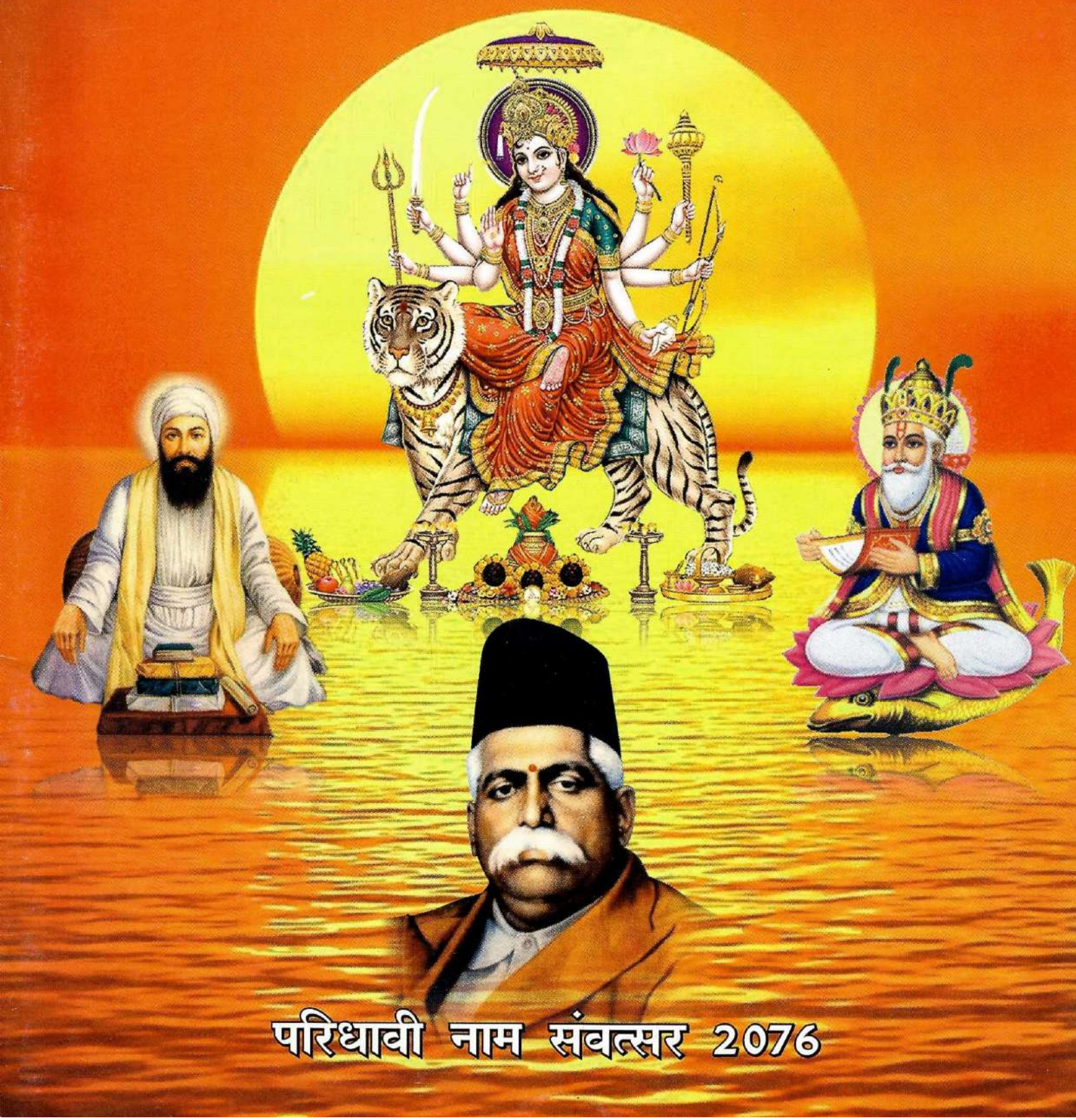

परिधावी नाम संवत्सर 2076

नेत्रकुम्भ (प्रयागराज) की झलकियाँ

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्र

सेवा संवाद

वर्ष-15, अंक-02 | वि.सं. 2076, युगाब्द 5121 | अप्रैल 2019 | मूल्य : 20.00

सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/- | आजीवन : रु. 2000/- | वार्षिक : रु. 200/-

मार्गदर्शक

डॉ0 अवधेश प्रसाद सिंह
अध्यक्ष

डॉ0 देवेन्द्र प्रताप सिंह
सचिव

राहुल सिंह
सहसचिव

ब्रह्मदेव शर्मा
संस्थापक न्यासी

सम्पादक
डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी
मो. 09451176775

सह सम्पादक
राजेश
मो. 09793120738

प्रबन्धक
विजय अग्रवाल
मो. 9415020996

मुद्रक एवं प्रकाशक
जितेन्द्र कुमार अग्रवाल
मो. 9415003111

कार्यालय : भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निरालानगर, लखनऊ (उ.प्र.) 226020
दूरभाष : 0522-4001837, 2789406
Email : sewasamwad@gmail.com

आलोक : *प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं। प्रकाशक एवं सम्पादक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।*

सहयोग राशि नकद अथवा चेक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'सेवा संवाद (भाऊराव देवरस सेवा न्यास)' के पक्ष में जो लखनऊ में देय हो, भेजने की कृपा करें अथवा हमारे बैंक ऑफ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ (IFSC : BKID0006806) के खाता संख्या 680610110000102 में जमा/अन्तरित करा कर कार्यालय पते पर सूचित करने की कृपा करें।

इस अंक में

1.	अपनी बात	डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी	5
2.	आत्मावलोकन	राजेश	6
3.	हिन्दू नव वर्ष ;विक्रम संवत्द्ध को भी महत्व दें	संकलन	7
4.	अमलतास	स्वास्थ्य	10
5.	अपनी जीवनशैली ऐसी बनाएं कि चिकित्सा	वी. भगय्या	11
6.	भगवान झूलेलाल का अवतरण दिवस	संकलन	12
7.	समस्त जीवों को पानी उपलब्ध हो	भैया जी जोशी	14
8.	वृक्षों के साथ मित्रवत व्यवहार करें	पर्यावरण	17
9.	सेवा और समर्पण से सुसज्जित श्रेष्ठ परंपराओं का देश भारत	समाचार	19
10.	325 स्थानों पर 35 हजार लोगों का निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण	समाचार	21
11.	जो स्वयं के लिए कुछ नहीं करता, वह ऋषि है	भैयाजी जोशी	22
12.	निःस्वार्थ सेवा भाव ही कामयाबी का मूल मंत्र	शेखर अवस्थी	23
13.	परेड में बेहतर प्रदर्शन पर 43 स्वयंसेवकों का सम्मान	समाचार	25
14.	डॉ. हेडगेवार के विचार आज भी कितने प्रासंगिक	शेखर अवस्थी	26
15.	डॉ. हेडगेवार सेवा समिति ने बदली नंदूरबार की तस्वीर	समाचार	28
16.	दान की परम्परा चलती रहे	संकलन	33
17.	हिन्दू समाज की परम्पराओं व आस्थाओं के	समाचार	35
18.	दुर्गा के नौ ;9द्ध स्वरूपों की पूजा	संकलन	36

अपनी बात

समाज में कुछ ही ऐसे लोग होते हैं। जो अपने सुख–दुःख की चिन्ता न करते हुए अपनों की, अपने समाज तथा राष्ट्र की चिन्ता करते हैं। इनके लिए किसी उद्‌बोधन अथवा किसी प्रेरणा की आवश्यकता नहीं होती। ये सदैव परोपकारार्थ अपना तन–मन सब कुछ न्योछावर करने के लिए तैयार रहते हैं। परन्तु समाज में अधिकांश लोग ऐसे होते हैं जो सब कुछ होते हुए भी अपने संकुचित स्व की सीमा से आगे देख–सुन अथवा विचार नहीं कर पाते–**'खुद से पहले औरों की सुगति हमारा धर्म है'**, इसका भाव नहीं समझ पाते। ऐसे ही लोगों को उद्‌बोधित–जागृत करने के लिए शास्त्र, ग्रन्थ तथा स्वयं के जीवन को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत करने वाले संत, महात्माओं के जीवन की घटनाओं का उल्लेख, उनके कृतकार्य तथा उनके अमृत वचनों को बार–बार स्मरण करने की आवश्यकता है, ताकि 'परस्पर देवोभव' की भावना में श्रेष्ठ–उत्तम आचरण कर सकें। **''सर्वे भवन्तु सुखिनः''** एवं **'वसुधैवकुटुम्बकम्'** की संकल्पना को साकार कर सकें। इसी परिप्रेक्ष्य में डा. हेडगेवार से सम्बंधित उनके कुछ प्रतिनिधि विचारों को पत्रिका में स्थान दिया गया है।

डॉ, जी कोरे चिन्तक नहीं थे, उन्होने व्यक्ति की मनोरचना सँवारने के लिए दैनिक शाखा की अनोखी पद्धति का विकास किया और निज के उदाहरण से हजारों अन्तःकरणों में हिन्दू संगठन के स्वप्न को साकार कर दिखाने के संकल्प को जगाया। सभी धर्मों के साथ समान वृत्ति, सभी जातियों के साथ समानता की बुद्धि और सभी लोगों के साथ सेवा परायणता का व्यवहार संघ की ही पद्धति है। हिन्दुस्तान के कल्याण के लिए, भौतिक जगत में हिन्दू राष्ट्र को स्वाभिमान से जीने के लिए जो कुछ करना आवश्यक होगा वह सब करने का संगठन का निश्चय है। उन्हें विश्वास था कि विचारवान तथा बुद्धिमान हिन्दू तरूण देशहित में कठिन से कठिन कार्य करने के लिए अग्रसर होंगे।

प्रतिवर्ष चैत्र मास शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा–वर्ष प्रतिपदा के रूप में प्रसिद्ध हैं। वर्ष प्रतिपदा से जुड़े अनेक सामाजिक, ऐतिहासिक सन्दर्भ हैं जिन्हें याद कर भारतीय जन जीवन में यह दिन पर्वोत्सव के रूप में मनाया जाता है। डा. हेडगेवार (संघ के सस्थापक) का जन्म दिवस वर्ष प्रतिपदा ही है। इसी दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की। ब्रह्मा जी द्वारा सृष्टि की रचना तथा काल गणना का शुभारम्भ भी इसी दिन हुआ। सम्राट विक्रमादित्य द्वारा विक्रमी संवत् इसी दिन से प्रारम्भ हुआ था और संत झूलेलाल का जन्म दिवस तथा शक्ति की आराधना का दिवस नवरात्रि का शुभारम्भ दिवस भी वर्ष प्रतिपदा ही हैं। **वर्ष प्रतिपदा दिनांक 6 अप्रैल 2019 से आरम्भ होने वाले नव संवत्सर 2076 के शुभ अवसर पर** भाऊराव देवरस सेवा न्यास एवं सेवा संवाद परिवार अपने पाठकों के यशस्वी जीवन के लिए, मंगलकामनाओं के साथ यह अंक आपको समर्पित करता है।

❐ शिव

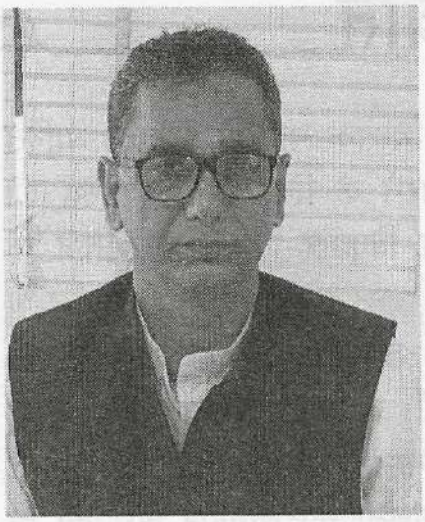

जल नहीं तो जीवन नहीं

जल प्रकृति की अनमोल धरोहर है। बिना पानी के जीवन संभव नहीं है। पीने के लिये शुद्ध जल हमारे लिये जरूरी है। क्योंकि स्वच्छ एवं सुरक्षित जल अच्छे स्वास्थ्य की कुंजी है। धरती के दो तिहाई हिस्से पर पानी भरा हुआ है। फिर भी पीने योग्य शुद्ध जल पृथ्वी पर उपलब्ध जल का मात्र एक प्रतिशत हिस्सा ही है। 97 प्रतिशत जल महासागर में खारे पानी के रूप में भरा हुआ है। शेष रहा दो प्रतिशत जल बर्फ के रूप में जमा है। आज समय है कि हम पानी की कीमत समझें।

जल नहीं तो जीवन नहीं। पर इस बड़े तथ्य को जानने के बाद भी हम कहीं ज्यादा गंभीर नहीं दिखाई देते। टुकड़ों–टुकड़ों में सही पानी फिर भी हमें मिल ही जाता है। और इसलिए हम इसे एक बड़ी महत्वपूर्ण आवश्यकता के रूप में दर्ज नहीं कर पाए हैं।

अध्ययन बताते हैं कि लगभग 40 देश और एक अरब लोग आज भी पर्याप्त पानी के अभाव से त्रस्त हैं। और अगर ऐसा ही रहा, तो 2050 तक 10 अरब लोग प्यासे हो जाएंगे। अगर भारत को ही देखें, तो लगभग 203 शहरों में प्रति व्यक्ति 100 लीटर पानी का अभाव है। राजस्थान के 10 शहरों में तीन दिन में एक बार पानी आता है। उत्तर प्रदेश के 6,000 गांव पानी के सीधे अभाव में फसे हैं। यहां 36 जिलों का भू–जल पीने योग्य नहीं है। देश की बड़ी नदियां पानी की कमी झेल रही हैं। और छोटी नदियां प्रायः लुप्त हो चुकी हैं। इसके चलते करोड़ों लोगों की जल आपूर्ति में लगभग 30 प्रतिशत की कटौती हो चुकी है।

देश का कोई भी राज्य ऐसा नहीं है, जो जल संकट से ना जूझ रहा हो। यह विडंबना ही है कि हिमालयी राज्य जिन्हें प्रकृति प्रदत्त नदियों का साथ मिला है, वहां के लोग भी पानी से आधे–अधूरे हैं। अकेले उत्तराखंड में 8,000 से ज्यादा गांव जल संकट झेल रहे हैं। वैसे ही जम्मू–कश्मीर और हिमाचल प्रदेश गर्मियों में जल विपदा झेलते हैं। यही दशा उत्तर पूर्वी हिमालयी राज्यों की भी है। गत दो दशकों में इन राज्यों में पानी का प्रमुख स्त्रोत प्राकृतिक धारे तेजी से सूखे हैं। पर्याप्त रूप से नदियों व ग्लेशियरों से घिरे हिमालय के लोग जल दुर्लभता में हों, तो यह विडंबना ही कहलाएगी। राजस्थान जैसे राज्य में जल दुर्लभता की बात फिर भी समझ में आती है। यह विडंबना ही है कि देश की जल नीति दोनों ही क्षेत्रों में पानी उपलब्ध कराने में असफल है।

दक्षिण भारत में पानी के स्रोत तालाब भी बड़े संकट में जा चुके हैं। ये तालाब यहां की जल संस्कृति के सबसे बड़े सूचक थे। इतिहास और वर्तमान इस बात के साक्षी हैं कि तालाब तब भी उतने ही महत्वपूर्ण थे, जितने कि आज हैं। अदीलाबाद, हैदराबाद जैसे बड़े शहर तालाबों की ही कृपा पर जिंदा हैं। वहीं उत्तर प्रदेश के कई ब्लाकों को चिह्नित कर दिया गया है, जहां आने वाले समय में एक बूंद पानी भी नहीं बचेगा। जहां 50 फीट में पानी मिल जाता था, आज वहां 250–300 फीट पहुंच चुका है। एक सर्वेक्षण के अनुसार गुजरात और सौराष्ट्र में खोदे जा रहे कुओं में पानी 1,200 फीट गहराई तक भी नहीं मिल पा रहा है। राजस्थान के पाली इलाके में लाखों लोगों के लिए रेलगाड़ी कई लाख लीटर पानी लाती है। ये रेलगाड़ी इस रेगिस्तानी राज्य के 15 शहरों और 130 गांवों की लाइफ लाइन है।

बढ़ता शहरीकरण पानी के संकट को तेजी से गहरा रहा है, क्योंकि शहरों की बढ़ती आबादी के लिए पानी की उपलब्धता गांवों के नदी, तालाबों से पूरी की जा रही है। इससे गांव में जल संकट पैदा हुआ है। पानी की उपलब्धता ही एक बड़ा प्रश्न नहीं है, बल्कि बढ़ता जल प्रदूषण एक संकट के रूप में आ चुका है। जहां देश को जल संकट प्रभावित कर रहा है, वहीं दूसरी तरफ जल प्रबंधन व संरक्षण की स्पष्ट सरकारी नीतियां नहीं दिखाई देती। हम भाग्यशाली देश हैं, जिस पर मानसून की कृपा है और पर्याप्त वर्षा हमारे किसी भी जल संकट का सीधा उत्तर है, बशर्ते हम इसको समय पर समझें।

❐ राजेश

हिन्दू नव वर्ष (विक्रम संवत्) को भी महत्व दें

एक जनवरी से प्रारम्भ अंग्रेजी नव वर्ष को हम इतना महत्व देते हैं पर क्या अपनी महान एवं सनातन संस्कृति से जुड़े नव वर्ष की तरफ भी हमारा वही भाव, वही समर्पण बन रहता है? नहीं, पर आखिर क्यों ऐसा है? हमारी नयी पीढ़ी को अपनी प्राचीन एवं अतुलनीय संस्कृति को संभालना एवं ससम्मान इसका प्रचार भी करना होगा क्योकि ये 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की बात करती है।

एक जनवरी से प्रारम्भ होने वाली काल गणना को हम ईसवी सन् के नाम से जानते हैं जिसका सम्बन्ध ईसाई जगत व ईसा मसीह से है। इसे रोम के सम्राट जूलियस सीजर द्वारा ईसा के जन्म के तीन वर्ष बाद प्रचलन में लाया गया। भारत में इसवी सन् का प्रचलन अंग्रेजी शासकों ने 1752 में किया। 1752 से पहले ईस्वी सन् 25 मार्च से शुरू होता था किन्तु 18 वीं शताब्दी से इसकी शुरूआत एक जनवरी से होने लगी। जनवरी से जून रोमन के नामकरण रोमन, जोनस, मार्स इत्यादि के नाम पर है।

जुलाई और अगस्त रोम के सम्राट जूलियस सीजर तथा उसके पौत्र आगस्टन के नाम पर तथा सितम्बर से दिसम्बर तक रोमन संवत् के मासों के आधार पर रखे गयें हैं।

क्या ये आधार सही है? काल गणना का आधार तो ग्रहों और नक्षत्रों की स्थिति पर आधारित होना चाहिए।

ग्रेगेरियन कैलेण्डर की काल गणना मात्र दो हजार वर्षों की अतिअल्प समय को दर्शाती है। जबकि यूनान की काल गणना 1582 वर्ष, रोम की 2757 वर्ष, यहूदी 5768, मिस्त्र की 28691, पारसी 198875 तथा चीन की 96002305 वर्ष पुरानी है। इन सबसे अलग यदि भारतीय काल गणना की बात करें तो हमारे ज्योतिष के अनुसार पृथ्वी की आयु एक अरब 97 करोड़ 39 लाख 49 हजार 110 वर्ष है। जिसके व्यापक प्रमाण हमारे पास उपलब्ध हैं। हमारे प्राचीन ग्रंथो में एक एक पल की गणना की गई है।

दो हजार वर्ष पहले शकों ने सौराष्ट्र और पंजाब को रौंदते हुए अवंतिका पर आक्रमण कर विजय प्राप्त की। विक्रमादित्य ने राष्ट्रीय शक्तियों कों एक सूत्र में पिरोया और शक्तिशाली मोर्चा खड़ा करके ईसा पूर्व 57 में शकों पर भीषण आक्रमण कर विजय प्राप्त की। थोड़े समय में ही इन्होनें कोंकण, सौराष्ट्र, गुजरात और सिंध भाग के प्रदेशों को भी शकों से मुक्त करवा लिया। वीर विक्रमादित्य ने शकों को उनके गढ़ अरब में भी करारी मात दी। इसी सम्राट विक्रमादित्य के नाम पर भारत में विक्रमी संवत प्रचलित हुआ। सम्राट पृथ्वीराज के शासनकाल तक इसी संवत के अनुसार कार्य चला। इसके बाद भारत में मुगलों के शासनकाल के दौरान सरकारी क्षेत्र में हिजरी सन् चलता रहा। भारतीय सरकार ने शक संवत को अपनाया।

जिस प्रकार ईस्वी संवत् का सम्बन्ध ईसा से है, उसी प्रकार हिजरी सम्वत् का सम्बन्ध मुस्लिम जगत और हजरत मोहम्मद से है। किन्तु विक्रम संवत् का सम्बन्ध किसी भी धर्म से न होकर सारे विश्व की प्रकृति, खगोल सिद्धांत व ब्रहाण्ड के ग्रहों व नक्षत्रों से है। इसलिए भारतीय काल गणना पंथ निरपेक्ष होने के साथ सृष्टि की रचना व राष्ट्र की गौरवशाली परम्पराओं को दर्शाती है। इतना ही नहीं, ब्रम्हाण्ड के सबसे पुरातन ग्रंथों वेदों में भी इसका वर्णन है। नव संवत् यानि संवत्सरों का वर्णन यजुर्वेद के 27वें व 30वें अध्याय के मंत्र क्रमांक क्रमशः 45 व 15 में विस्तार से दिया गया है। विश्व को सौर मण्डल के ग्रहों व नक्षत्रों की चाल व निरन्तर बदलती उनकी स्थिति पर ही हमारे दिन, महीने, साल और उनके सूक्ष्मतम भाग पर आधारित हैं।

इसी वैज्ञानिक आधार के कारण ही पाश्यात्य देशों के अधांनुकरण के बावजूद, चाहे बच्चे के गर्भाधान की बात हो, जन्म की बात हो, नामकरण की बात हो, गृह प्रवेश या व्यापार प्रारम्भ करने की बात हो हम एक कुशल पंडित के पास जाकर शुभ मुहूर्त पूछते हैं और तो और, देश के बड़े से बड़े राजनेता भी सत्तासीन होने के लिए सबसे पहले एक अच्छे मुहूर्त का इतंजार करते हैं जो कि विशुद्ध रूप से विक्रमी संवत् के पंचाग पर आधारित होता है। भारतीय मान्यतानुसार कोई भी काम शुभ मुहूर्त में किया जाए तो उसकी सफलता में चार चाँद लग जाते हैं। अतः स्पष्ट है कि भारतीय नववर्ष मनाना ईसाई नववर्ष मनाने से पूर्णरूपेण श्रेष्ठ है।

भारतीय नववर्ष का प्राकृतिक एंव ऐतिहासिक महत्व :

वसंत ऋतु का आरम्भ वर्ष प्रतिपदा से ही होता है जो उल्लास, उंमग, खुशी तथा चारों तरफ पुष्पों की सुगंधि से भरी होती है।

फसल पकने का प्रारम्भ यानि किसान की मेहनत का फल मिलने का भी यही समय होता है। नक्षत्र शुभ स्थिति में होते हैं अर्थात किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने के लिये यह शुभ मुहूर्त होता है।

1. यह दिन सृष्टि रचना का पहला दिन है : इस दिन से एक अरब 97 करोड़ 39 लाख 49 हजार 110 वर्ष पूर्व इसी दिन सूर्योदय से ब्रह्मा जी ने जगत की रचना प्रारम्भ की।

2. विक्रमी संवत् का पहला दिनः उसी राजा के नाम पर सवंत् प्रारम्भ होता था जिसके राज्य में न कोई चोर हो, न अपराधी हो, और न ही काई भिखारी हो। साथ ही राजा चक्रवर्ती सम्राट भी हो। सम्राट विकमादित्य ने 2074 वर्ष पहले इसी दिन राज्य स्थापित किया था।

3. प्रभु श्री राज का राज्याभिषेक दिवस : प्रभु राम ने भी इसी दिन को लंका विजय के बाद अयोध्या में राज्याभिषेक के लिए चुना।

4. नवरात्र स्थापना : शाक्ति और भक्ति के नौ

दिन अर्थात्, नवरात्र स्थापना का पहला दिन यही है। प्रभु राम के जन्मदिन रामनवमी से पूर्व नौ दिन उत्सव मनाने का प्रथम दिन।

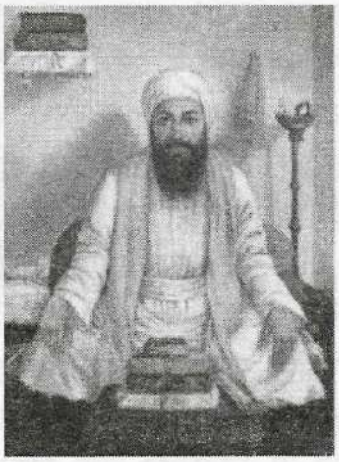

5. गुरू अंगददेव प्रगटोत्सव : सिख परम्परा के द्वितीय गुरू का जन्म दिवस।

6. समाज को श्रेष्ठ आर्य मार्ग पर ले जाने हेतु स्वामी दयांनद सरस्वती ने इसी दिन को आर्य समाज स्थापना दिवस के रूप में चुना।

7. संत झूलेलाल जन्म दिवस : सिंध प्रान्त के प्रसिद्ध समाज रक्षक वरूणावतार संत झूलेलाल इसी दिन प्रगट हुए।

8. शालिवाहन संवत्सर का प्रारम्भ दिवसः विक्रमादित्य की भाँति शालिवाहन ने हूणों को परास्त कर दक्षिण भारत में श्रेष्ठतम राज्य स्थापित करने हेतु यही दिन चुना। ❐

9. युगाब्द संवत्सर का प्रथम दिनः 5119 वर्ष पूर्व युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ।

भारतीय सांस्कृतिक जीवन का विक्रमी संवत से गहरा नाता है। भारतीय नववर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को मनाया जाता है जिसे विक्रम संवत् का नवीन दिवस भी कहा जाता है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था– यदि हमें गौरव से जीने का भाव जगाना है, अपने अन्तर्मन में राष्ट्र भक्ति के बीज को पल्लवित करना है तो राष्ट्रीय तिथियों का आश्रय लेना होगा। गुलाम बनाए रखने वाले परकीयों की दिनांको पर आश्रित रहने वाला व्यवहार बदलना होगा। भारतीय तिथियाँ हमारे मन में यह उद्घोष जगाती हैं कि हम पृथ्वी माता के पुत्र हैं सूर्य चन्द्र व नवग्रह हमारे आधार हैं प्राणी मात्र हमारे पारिवारिक सदस्य हैं तभी हमारी संस्कृति का बोध वाक्य ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' का सार्थक्य सिद्ध होता है। ध्यान रहे कि सामाजिक विकृतियों ने भारतीय जीवन में दोष एवं रोग भर दिया, फलतः कमजोर राष्ट्र के भू भाग पर परकीय, परधर्मियों ने आक्रमण कर हमें गुलाम बना दिया। सदियों से पराधीनता की पीड़ायें झेलनी पड़ी। पराधीनता के कारण जिस मानसिकता का विकास हुआ इससे हमारे राष्ट्रीय भाव का क्षय हो गया और समाज में व्यक्तिवाद, भय एवं निराशा का संचार होने लगा। जिस समाज में भगवान श्रीराम, कृष्ण, बुद्ध महावीर नानक व अनेक ऋषि–मुनियों का अविर्भाव हुआ। जिस धराधाम पर परशुराम, विश्वामित्र, बाल्मीकि वशिष्ठ, भीष्म एंव चाणक्य जैसे दिव्य पुरूषों का जन्म हुआ। जहाँ परम प्रतापी राजा महाराज व सम्राटों की श्रृंखला का गौरवशाली इतिहास निर्मित हुआ। वहाँ की गौरवशाली परम्पराएं ही हमारा वास्तविक हित कर सकेगी।

मोरारजी देसाई को जब किसी ने पहली जनवरी को नववर्ष की बधाई दी तो उन्होनें उत्तर दिया था–किस बात की बधाई दी ? मेरे देश और देश के सम्मान का तो इस नववर्ष से कोई सम्बन्ध नहीं। यही हमें लोगों को भी समझना और समझाना होगा। क्या एक जनवरी के साथ ऐसा एक भी प्रसंग जुड़ा है जिससे राष्ट्रप्रेम जाग सके, स्वाभिमान जाग सके या श्रेष्ठ होने का भाव जाग सके? आइये विदेशी को फेंक स्वदेशी अपनायें और गर्व के साथ भारतीय नववर्ष यानि विक्रमी संवत को ही मनायें तथा इसका अधिक से अधिक प्रचार करें।

❐

आप भी लिखें

सेवा संवाद के आप सुधी पाठक हैं, आपके विचार, सुझाव हमारे लिए सदैव प्रेरणादायी रहे हैं। सेवा सम्बन्धी आलेख, सेवा के प्रेरक प्रसंग, सेवा कार्य के उल्लेखनीय व्यक्तित्व, सेवा सस्थानों का परिचय एवं उनके कार्य, सेवा को प्रोत्साहित करने वाली घटनाएं, काव्य–गीत, कथा–कहानी आदि विषयों पर सामग्री प्रकाशित करना हमारा उद्देश्य हैं। अस्तु आप से प्रार्थना है कि हमारी सीमाओं को ध्यान में रखते हुए अपना आलेख भेजकर हमारा सहयोग करने का कष्ट करें। प्रत्येक अंक में प्रकाशित आलेखों पर आप अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित करें।

हमारा पता है–

E-mail : sewasamwad@gmail.com / sevasamvad@outlook.com

सेवा संवाद

सी-91 निराला नगर, लखनऊ - 226020 उत्तर प्रदेश

मो0 : 9450020514, 9454049918

❐

अमलतास

देश में पार्कों और सड़कों के किनारे अमलतास के पीले फूलों वाले पेड़ मिल जाते हैं। इसकी फलियां पकने पर काली–काली लंबी लटकती रहती है। सुखने पर फलियों को तोड़ कर गूदा इक्ट्ठा किया जाता है।

कब्ज– यह कब्ज दूर करने का बहुत ही सुरक्षित उपाय है बच्चों, गर्भवती महिलाओं, कमजोर शरीर वालों को भी निश्चित होकर दिया जा सकता है। बुखार के दौरान या बाद में कब्ज में देने में बहुत लाभदायक है। 5 से 10 ग्राम पानी में भिगोकर पका कर पीने को दें।

मधुमेह (डायबिटीज)– गाऊट, रियुमेटोइड आर्थराईटिस में इसे लेने से कब्ज के साथ–साथ दर्द व सूजन में भी राहत मिलती है। टॉसिल व गले की खराश में इसकी छाल के काढें से गरारे करने से आराम मिलाता हैं।

बच्चों की कब्ज– जो बच्चें माँ का दूध लेते है उन छोटे बच्चों की कब्ज में चने के बराबर गूद को एक चम्मच पानी में घोलकर देन से लाभ होता है।

रिंगवर्म (दाद)– आधा कप गर्म पत्तियों को पीसकर चटनी सी बना लें। और सात दिनों तक प्रभावित स्थान पर लगाएँ।

बच्चों में पेट के कीड़े– गूदे को पानी में घोलकर सुबह पिलाएँ।

त्वचा के रोग– पत्तों के काढ़े से प्रभावित स्थान को धोएँ।

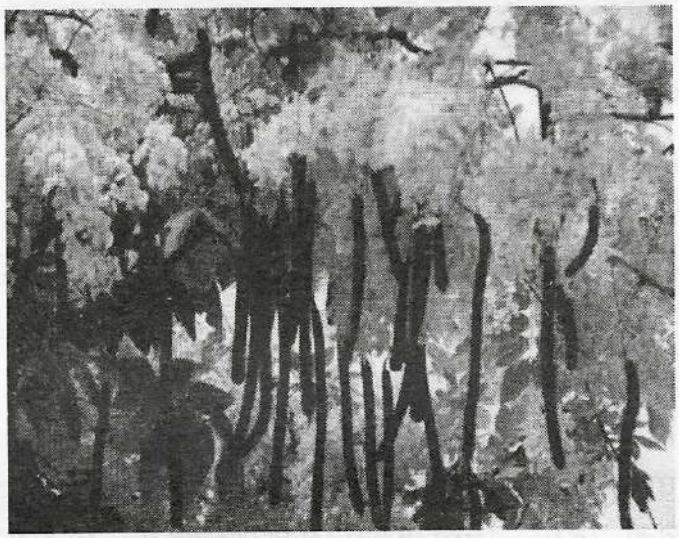

हमें युवाओं की प्रतिभा को निखारना है

❑ श्री राजीव कुमार – नीतिआयोग

एक सर्वे बताता है कि विश्व में वही कम्पनी सबसे आगे बढ़ी जो मुनाफे के पीछे नहीं तो सामाजिक कामों में भी काम करती रही। हमें अपना जीवन बेहतर (अच्छा) करना चाहिए। अपनी सभ्यता, अपनी परम्परा में व्यक्ति और प्रकृति का समन्वय है। प्रकृति का शोषण नहीं तो दोहन करना सिखाया गया है क्योंकि इसी से यह धरती सुरक्षित रहेगी।

हमें टेक्नोलॉजी से डरने की आवश्यकता नहीं है, उसको भी साथ लेते हुए गहरी सामाजिक चेतना जगानी है।

हमें खुद अपने आप सालाना लक्ष्य तय करना है। Evaluation भी खुद करना है। इस प्रकार से हमने काम किया तो देश में एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत होगा।

नीति आयोग युवाओं को आगे बढ़ाने में पूरा सहयोग करेगा– हमें श्रेष्ठ, सक्षम और स्वस्थ भारत का निर्माण करना है और इसके लिए "अटल प्रतिभा पोषण केन्द्र" के माध्यम से हमें युवाओं की प्रतिभा को निखारना है।

❑

अपनी जीवनशैली ऐसी बनाएं कि चिकित्सा की आवश्यकता न पड़े

❑ वी. भगय्या

सेवा भारती की पैथ लैब का शुभारम्भ :

नई दिल्ली. सेवा भारती के वढेरा भवन केन्द्र में वंचित वर्ग के लिए पैथ लैब का उद्घाटन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह वी. भगय्या जी ने किया। अशोक विहार फेज–2 में लैब का शुभारम्भ करने के पश्चात उन्होंने कहा कि सेवा कार्यों में समर्पण के कारण ही यह देश अब तक जीवित है। जितने भी लोग सेवा भारती केन्द्रों में काम करते हैं, सभी प्रेम और सम्मान का व्यवहार करते हैं। जिससे लोगों का आधा रोग दूर हो जाता है।

सह सरकार्यवाह जी ने लैब में लगी आधुनिक टैक्नोलॉजी की चिकित्सा जांच मशीनों के लिए सबको बधाई देते हुए कहा कि हमें अपनी जीवनशैली ऐसी बनानी चाहिए कि हमें चिकित्सा की जरूरत न पड़े, इसके लिए संयमित खानपान व व्यायाम पर ध्यान देने का आग्रह किया। वातावरण की स्वच्छता के साथ जैविक कृषि स्वस्थ भारत निर्माण के लिए जरूरी है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि अगले 10 सालों में भारत यूरिया मुक्त हो जाएगा। सेवा की जितनी भी संस्थाएं हैं, उन्हें लोगों के खानपान और जीवनचर्या को सुधारने का प्रयास प्रमुखता से करना चाहिए।

कार्यक्रम के अध्यक्ष सुन्दर लाल ने बताया कि मानव सेवा ही भारत सेवा तथा भगवान की सेवा है जो सेवा भारती कर रही है।

सेवा भारती के वढेरा भवन का निर्माण वर्ष 2015 में आरम्भ हुआ था। इस भवन के लिए 500 गज भूमि वी.के. वढेरा जी ने दान की थी। योगदान केन्द्र भूतल में 9.4.2017 को शुरु किया गया। यहां पर घरों के अनुपयोगी कपड़े या अन्य सामान एकत्र होता है, जिन्हें समाज के वंचित लोगों को 10 या 20 रुपये की सांकेतिक राशि में दे दिया जाता है। इसका रिकॉर्ड रखा जाता है। प्रतिदिन 25 से 30 लोगों को यह सामान दिया जाता है। डायलिसिस सेंटर 24 जून 2017 को शुरु हुआ. शुरू में 8 मशीनें रोटरी क्लब से प्राप्त हुईं। इस समय कुल 15 मशीनें हैं। प्रातः 7 बजे से रात्रि 9 बजे तक तीन शिफ्टों में चिकित्सा जांच का काम हो रहा है। प्रतिदिन लगभग 45 लोगों का डायलिसिस यहां होता है। भूतल में 21 अप्रैल 2018 को एक फैशन डिजाइनिंग केन्द्र शुरु किया गया जो प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के अंतर्गत मान्यता प्राप्त है।

❑

भगवान झूलेलाल का अवतरण दिवस

भारतीय धर्मग्रंथों में कहा गया है कि जब–जब अत्याचार बढ़े हैं, नैतिक मूल्यों का क्षरण हुआ है तथा आसुरी प्रवृत्तियां हावी हुई हैं, तब–तब किसी न किसी रूप में ईश्वर ने अवतार लेकर धर्मपरायण प्रजा की रक्षा की। संपूर्ण विश्व में मात्र भारत को ही यह सौभाग्य एवं गौरव प्राप्त रहा है कि यहां का समाज साधु–संतों के बताए मार्ग पर चलता आया है।

ऐसी ही एक कथा भगवान झूलेलालजी के अवतरण की है। शताब्दियों पूर्व सिन्धु प्रदेश में मिर्ख शाह नाम का एक राजा राज करता था। राजा बहुत दंभी तथा असहिष्णु प्रकृति का था। सदैव अपनी प्रजा पर अत्याचार करता था।

इस राजा के शासनकाल में सांस्कृतिक और जीवन–मूल्यों का कोई महत्व नहीं था। पूरा सिन्धु प्रदेश राजा के अत्याचारों से त्रस्त था। उन्हें कोई ऐसा मार्ग नहीं मिल रहा था जिससे वे इस क्रूर शासक के अत्याचारों से मुक्ति पा सकें।

लोककथाओं में यह बात लंबे समय से प्रचलित है कि मिर्ख शाह के आतंक ने जब जनता को मानसिक यंत्रणा दी तो जनता ने ईश्वर की शरण ली।

सिन्धु नदी के तट पर ईश्वर का स्मरण किया तथा वरुण देव उदेरोलाल ने जलपति के रूप में मत्स्य पर सवार होकर दर्शन दिए। तभी नामवाणी हुई कि अवतार होगा एवं नसरपुर के ठाकुर भाई रतनराय के घर माता देवकी की कोख से उपजा बालक सभी की मनोकामना पूर्ण करेगा।

समय ने करवट ली और नसरपुर के ठाकुर रतनराय के घर माता देवकी ने चैत्र शुक्ल 2 संवत 1007 को बालक को जन्म दिया एवं बालक का नाम उदयचंद रखा गया। इस चमत्कारिक बालक के जन्म का हाल जब मिर्ख शाह को पता चला तो उसने अपना अंत मानकर इस बालक को समाप्त करवाने की योजना बनाई।

बादशाह के सेनापति दल–बल के साथ रतनराय के यहां पहुंचे और बालक के अपहरण का प्रयास किया, लेकिन मिर्ख शाह की फौजी ताकत पंगु हो गई। उन्हें उदेरोलाल सिंहासन पर आसीन दिव्य पुरुष दिखाई दिया। सेनापतियों ने बादशाह को सब हकीकत बयान की।

उदेरोलाल ने किशोर अवस्था में ही अपना चमत्कारी पराक्रम दिखाकर जनता को ढांढस बंधाया और यौवन में प्रवेश करते ही जनता से कहा कि बेखौफ अपना काम करें। उदेरोलाल ने बादशाह को संदेश भेजा कि शांति ही परम सत्य है। इसे चुनौती मान बादशाह ने उदेरोलाल पर आक्रमण कर दिया।

बादशाह का दर्प चूर–चूर हुआ और पराजय झेलकर उदेरोलाल के चरणों में स्थान मांगा। उदेरोलाल ने सर्वधर्म समभाव का संदेश दिया। इसका असर यह हुआ कि मिर्ख शाह उदयचंद का परम शिष्य बनकर उनके विचारों के प्रचार में जुट गया।

उपासक भगवान झूलेलालजी को उदेरोलाल, घोड़ेवारो, जिन्दपीर, लालसांईं, पल्लेवारो, ज्योतिनवारो, अमरलाल आदि नामों से पूजते हैं।

सिन्धु घाटी सभ्यता के निवासी चैत्र मास के चन्द्रदर्शन के दिन भगवान झूलेलालजी का उत्सव संपूर्ण विश्व में चेटीचंड के त्योहार के रूप में परंपरागत हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं।

चूंकि भगवान झूलेलालजी को जल और ज्योति का अवतार माना गया है, इसलिए काष्ठ का एक मंदिर बनाकर उसमें एक लोटी से जल और ज्योति प्रज्वलित की जाती है और इस मंदिर को श्रद्धालु चेटीचंड के दिन अपने सिर पर उठाकर, जिसे बहिराणा साहब भी कहा जाता है, भगवान वरुणदेव का स्तुति गान करते हैं एवं समाज का परंपरागत नृत्य छेज करते हैं।

यह सर्वधर्म समभाव का प्रतीक है। झूलेलाल उत्सव चेटीचंड, जिसे सिन्धी समाज सिन्धी दिवस के रूप में मनाता चला आ रहा है, पर समाज की विभाजक रेखाएं समाप्त हो जाती हैं। ❐

सेवा से बड़ा कोई धर्म नहीं

बलिया : बलिया बाँसडीह बेरूवारबारी में सेवा भारती की बैठक आयोजित की गयी, जिसमें जिला अध्यक्ष दिनेशचन्द्र सिंह ने सेवा भारती के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सेवा भारती का मुख्य उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सेवा भारती को मुख्य उद्देश्य समाज के असहाय व पिछड़े लोगों को समाज की मुख्यधारा में लाना है। सेवा भारती तक पहुँच कर उसे स्वावलंबी बनाए। गोरक्ष प्रांत सह सेवा प्रमुख श्री करुणेश ने सेवा भारती के कार्यों को विस्तार से समझाया। जिला संगठन मंत्री श्री भोलानाथ अग्रवाल ने युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा कि सेवा से बड़ा कोई धर्म नहीं है। इसीलिए संगठित होकर समाज की सेवा करनी है।

10 रुपये में भरपेट भोजन

आगरा : सक्षम डावर मेमोरियल ट्रस्ट की ट्रस्टी पूरन डावर के सहयोग से सेवा भारती ने 'अंत्योदय अन्नपूर्णा योजना–भोजन सबके लिए' शुरू की है। इसमें 10 रुपये में स्वच्छ और पौष्टिक भोजन थाली में परोसकर कराया जाएगा। इसके अलावा द्वितीय चरण में भोजन योजना कामकाजी लोगों को ध्यान में रखकर शुरू होगी। देश में कोई भूखा न रहे, इसे ध्यान में रखते हुए यह योजना शुरू की गयी है। इस योजना का आगरा में 17 अक्टूबर को उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर पूनम डावर ने बताया कि नौकरी पेशा लोगों के लिए भी भोजन की व्यवस्था शुरू करने पर विचार हो रहा है। खासतौर से औद्योगिक क्षेत्रों में काम करने वाले लोगों को 25 रुपये में भोजन प्रदान करने की योजना है। इसमें यह प्रावधान हो सकता है कि आधी राशि मजदूर दे और आधी राशि कारखाना मालिक दें।

समस्त जीवों को पानी उपलब्ध हो

❑ भैया जी जोशी

देवगिरी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह भैया जी जोशी ने कहा कि भविष्य में भारत को यदि सुजलाम सुफलाम करना है तो दूरदृष्टि रखते हुए उसके लिए पर्याय, उपाय आदि करने के लिए समाज को आगे आना होगा। भगीरथ के अनुरूप ही अपने कार्य को सफलता मिलने तक जिद्दी प्रवृत्ति के साथ उस कार्य को निरंतर प्रारंभ रखना चाहिए। यश सफलता हमारे हाथ में है। सरकार्यवाह महात्मा फुले कृषि प्रतिष्ठान औरंगाबाद व कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय जलगांव द्वारा आयोजित जल संवाद 2019 विषय पर आयोजित कार्यक्रम में संबोधित कर रहे थे।

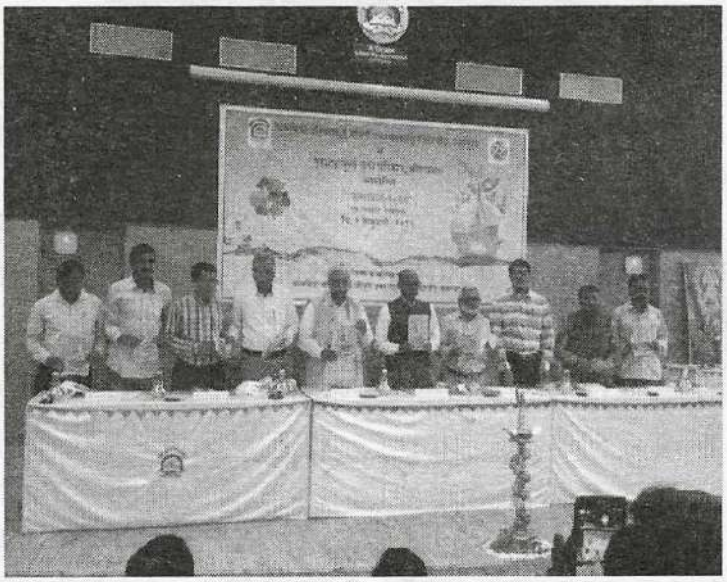

कार्यक्रम में उपस्थित जल विषय पर कार्य करने वाले जल सेवकों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि बादल यह आकाश लोक के जलदूत हैं और हम भू लोक के जलदूत हैं। अब आकाश के जलदूतों की भू लोक के जलदूत से दोस्ती होनी चाहिए। जल व्यवस्थापन के कार्यों में होने वाली कमियां व जन समस्याओं का गंभीर आंकलन ना होने के कारण आज जल की बड़ी विकराल समस्या निर्माण हो रही है। इस पृथ्वी पर जो–जो सजीव हैं, उन्हें सबको जल मिलना उनका मौलिक अधिकार है। इस अधिकार को कोई भी नहीं छीन सकता, किंतु आज जल पैसे से खरीदने का समय आ गया है जो एक गंभीर बात है।

कुल मिलाकर जल संवाद कार्यक्रम की ओर देखा तो यह जल खोजने के लिए किया गया एक कार्य होने की बात सामने आती है। इसी प्रकार से जल जागरण के लिए उठाए गए सकारात्मक कार्य दिखाई देते हैं, जल यह पंचमहाभूतओं में से एक तत्व है, बिना जल के मानव जीवन का जागृत होना असंभव है।

पंचमहाभूतों में से एक भी तत्व न होने पर मानव जीवन अधूरा होते हुए उसके अस्तित्व के बिना सजीवों का आश्रित रहना संभव नहीं है। किंतु सिर्फ अस्तित्व रखना उपयोगी नहीं है, बल्कि उस की उपलब्धता अत्यधिक बड़े पैमाने पर होनी चाहिए। उपलब्धता ना होने पर कमी निर्माण होती है, जबकि बढ़ोतरी होने पर नुकसान होता है। इसके कारण पंच महाभूतों का समतोल बिना किसी बाधा के सुचारू रखना अत्यधिक आवश्यक है। भैयाजी जोशी ने पानी के साथ साथ वृक्षों का संवर्धन व पौध रोपण करने के लिए जैन उद्योग समूह की प्रशंसा की। उनके द्वारा किए पौधारोपण के चलते आज क्षेत्र में अच्छी बारिश दिखाई देती है। इससे ही पानी एवं वृक्ष का संबंध ध्यान में आना चाहिए। उन्होंने जल संवर्धन के साथ–साथ वृक्ष संवर्धन को भी आवश्यक बताया।

उन्होंने कहा कि आज की शिक्षण प्रणाली से सभी कुछ हासिल किया जा सकता है, यह बिल्कुल सही नहीं है। उन्होंने झाबुआ जिले के शिव गंगा नामक प्रकल्प का उदाहरण देते हुए बताया कि वहां पर एक भी उपाधि प्राप्त या इंजीनियरिंग का व्यक्ति

नहीं है। किंतु सभी अपने काम में विशेषज्ञ हैं। यह प्रकल्प आज देश की पहचान निर्माण कर रहा है। उच्च शिक्षित ना होते हुए भी सकारात्मक कार्य किया जा सकता है। अनुभव से अत्यधिक सधे हुए लोगों को अपने साथ जोड़कर बड़े बड़े प्रकल्प का अभियान पूरे किए जा सकते हैं।

उन्होंने कहा कि सभी सुविधाओं की प्राप्ति के लिए सरकार पर निर्भर रहना योग्य नहीं है, शासन के पास से सहायता लेकर लोक सहभाग से कार्य किए जाने चाहिए. बहुत सारे स्थानों पर शासन के कार्यों पर स्थानीय लोगों ने अविश्वास दिखाया है। आजकल लोक सहभाग से अनेक प्रकल्प सफल होते दिखाई देते हैं। अभी भी बहुत से लोग जन जागृति से आगे आ रहे हैं, उनके कार्यों को समर्थन देते हुए सहायता के लिए आगे आना चाहिए।

देश की सप्त गंगा अर्थात् गंगा, गोदावरी, यमुना, सरस्वती, कावेरी व नर्मदा नदियों को एक दूसरे के साथ जोड़ा जाए तो देश की जल समस्या हमेशा के लिए खत्म हो सकती है। यह कार्य अत्यधिक धैर्य व मेहनत का है। पानी का होने वाला अपव्यय, बर्बादी, रासायनिक खादों के पानी पर होने वाले परिणामों के बारे में भैयाजी ने कहा कि आज बहुत से स्थानों पर बड़ी मात्रा में पानी उपलब्ध है, किंतु उसकी होने वाली बर्बादी के लिए देखभाल की आवश्यकता है। जितना पानी की आवश्यकता है उतने ही पानी का यदि हमने प्रयोग किया तो जल का बहुत बड़े अपव्यय को रोका जा सकता है।

हरित क्रांति के कारण अनेक लाभ अवश्य हुए हैं, किंतु हरित क्रांति के कारण संकरित बीज का निर्माण भी हुआ है। जिसके साथ साथ रासायनिक खाद भी आगे आए हैं। उनके बढ़ते प्रयोग से अनावश्यक कीटों का नाश करने के लिए कीटनाशक भी आए। इन सब से मिलने वाले विषैले अन्न, धान्य से नए–नए रोग फैल रहे हैं. जिस कारण आज जैविक खेती को प्रमुखता दी जानी चाहिए।

भविष्य में भारत को यदि सुजलाम सुफलाम रखना है तो दूर दृष्टि रखते हुए इन सब के लिए कुछ उपाय करने की दृष्टि से समाज को आगे आना चाहिए। इन कार्यों के लिए जो आगे आ रहे हैं उन्हें सहायता व प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। इस कार्यक्रम में उपस्थित सभी जलदूत यह भागीरथ ही हैं। उन्हें 01 दिन सफलता अवश्य मिलेगी, यह आशा व्यक्त करते हुए सरकार्यवाह जी ने अपने प्रबोधन को विराम दिया।

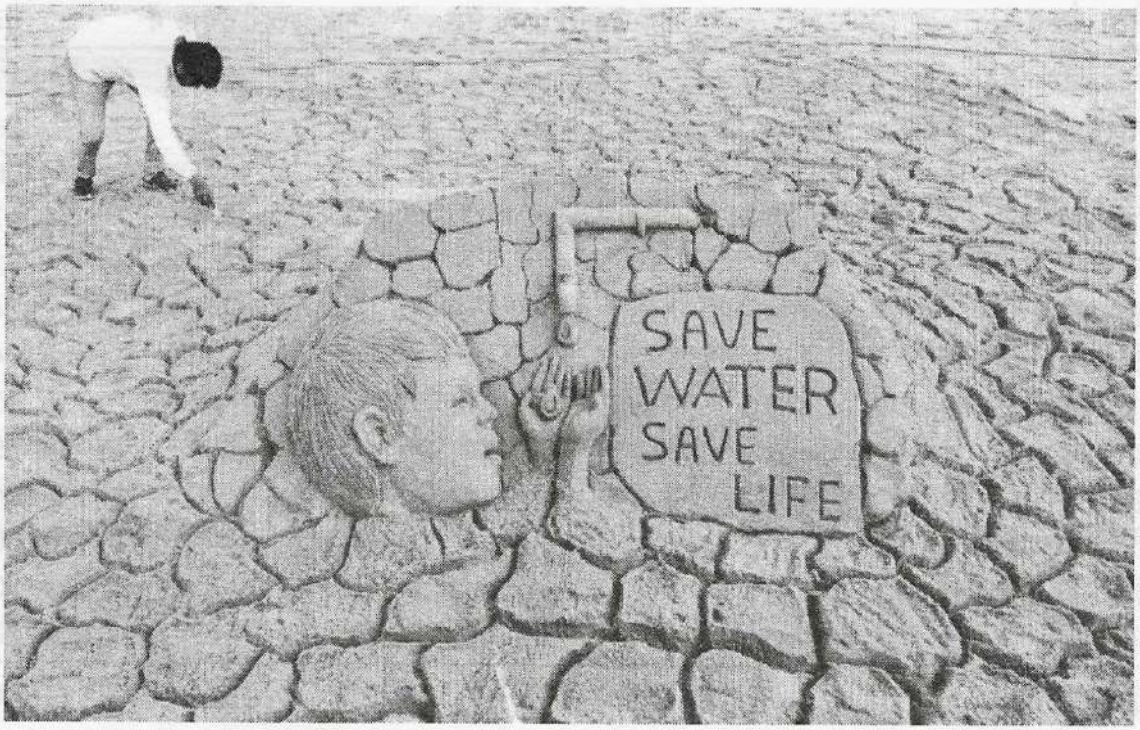

भाऊराव देवरस सेवा न्यास स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प

(अ) सुदूर ग्रामीण अंचल एवं शहरी क्षेत्र की 6 सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य केन्द्रों का संचालन

1 अप्रैल 2018 से 28 फरवरी 2019 तक लाभान्वित रोगी विवरण

क्र.	सेवा केन्द्र	दिवस	माह जनवरी 2019 तक लाभान्वित रोगी	माह फरवरी 2019 में लाभान्वित रोगी	कुल
1.	वेदान्त आश्रम, पपनामऊ	सोमवार	1032	101	1133
2.	सेवा समर्पण संस्थान बिन्दौवा	मंगलवार	2738	207	2945
3.	अम्बेदकरनगर	बुधवार	680	96	776
4.	51 शक्तिपीठ (बीकेटी)	गुरुवार	616	36	652
5.	अर्जुनपुर (बीकेटी)	शुक्रवार	43	00	43
6.	माधव सेवा आश्रम	शनिवार	281	57	338
	कुल लाभान्वित रोगी		**5390**	**497**	**5887**

(ब) माधवराव देवड़े स्मृति रुग्ण सेवा केन्द्र, सी-91, निरालानगर, लखनऊ

1.	एलोपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	8209	878	9087
2.	होम्योपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	5411	482	5893
	कुल लाभान्वित रोगी संख्या		**13620**	**1360**	**14980**

(स) रुग्ण सेवा केन्द्र, माधव सेवा आश्रम, लखनऊ

1.	होम्योपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	2732	256	**2988**
	1 अप्रैल 2018 से 28 फरवरी 2019 तक		**कुल लाभान्वित रोगी सं.**		**23855**

माधव सेवा आश्रम रायबरेली रोड, लखनऊ में प्रान्तशः ठहरने वाले लाभान्वित बन्धुओं की संख्या

क्र.	सेवा केन्द्र	माह जनवरी 2019 तक	माह फरवरी 2019 में	कुल
1.	उत्तर प्रदेश	56400	5771	62171
2.	उत्तराखण्ड	175	94	269
3.	बिहार	38484	3482	41966
4.	झारखण्ड	5683	291	5974
5.	उड़ीसा	477	43	520
6.	मध्य प्रदेश	2997	246	3243
7.	छत्तीसगढ़	618	26	644
8.	राजस्थान/गुजरात	81	20	101
9.	महाराष्ट्र	536	61	597
10.	नेपाल	966	75	1041
11.	दिल्ली/पंजाब/हरियाणा	522	40	563
12.	पश्चिम बंगाल	881	57	938
13.	अन्य प्रान्त	780	62	782
	योग	**108600**	**10268**	**118809**

पर्यावरण

वृक्षों के साथ मित्रवत व्यवहार करें

बरेली : ''वृक्ष मनुष्य के सच्चे मित्र हैं। वृक्ष धरा का आभूषण एवं जीवन का आधार हैं। मनुष्य को वृक्षों के साथ मित्रवत् व्यवहार करना चाहिए। जैसे अपने किसी रिश्तेदार को कष्ट में देखकर हमें कष्ट होता है, उसी प्रकार का अनुभव वृक्षों के साथ भी होना चाहिए। हरे वृक्षों का कटान बिल्कुल नहीं होना चाहिए। सरकार भी वृक्षों के प्रति काफी संजीदा है। इस वर्ष करोड़ों वृक्ष उत्तर प्रदेश में लगाये गये हैं और अगले वर्ष के लिए भी अभी से ही लक्ष्य तय कर लिया गया। इस कार्य में प्रत्येक नागरिक अपना योगदान दे। सभी लोग आगे बढ़कर इस कार्य को करें। वृक्ष लगाने और उनका संरक्षण करने से पुनीत कोई अन्य कार्य नहीं हो सकता। क्योंकि वृक्ष ही हमें जीवन देते हैं।'' ये बातें जिलाधिकारी डॉ. रमाशंकर मौर्य ने श्रीकृष्ण लाल शर्मा चेरिटेबल ट्रस्ट एवं खुशहाली फाउण्डेशन बरेली के तत्वाधान में आयोजित 'वृक्ष मित्र, ग्राम मित्र' अभियान के अंतर्गत पौधा वितरण कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहीं।

कार्यक्रम में 58 गांवों के लोगों को आम, अनार, बेर, बेल तथा नींबू के साढ़े सात हजार पौधे वितरित किये गये तथा लोगों को पोधारोपण एवं उनके संरक्षण के बारे में जानकारी दी गयीं। विश्व आयुर्वेद परिषद् के अध्यक्ष डॉ. योगेश मिश्र ने कहा वृक्ष हमें वायु प्रदान करते हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिए अधिक संख्या में वृक्ष लगाना आवश्यक हो गया है। साथ ही वृक्षों की रखवाली अपने बच्चों की तरह करनी चाहिए।

अमरत्व त्याग से मिलता है, प्रसिद्धि से नहीं

सेवा कहने का नहीं, करने का काम है। व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक कितनों का ऋणी होता है! सृष्टि में असंख्य जीव हैं उनका भी हम पर ऋण है। इसीलिए उनके प्रति भी कृतज्ञता भाव रहना आवश्यक है। इस ऋण को लेकर यदि हम सूची बनाने बैठें तो पता चलेगा कि हम असंख्य लोगों एवं जीव–जन्तुओं के ऋणी हैं। समाज ने हमें कितना दिया, कितना सिखाया, किसने शब्द सिखाये, किस–किस ने जीना सिखाया, छोटी से छोटी चीज सिखायी, इस पर विचार करेंगे तो चलेगा कि हम जो समाज को थोड़ा बहुत देते हैं वह कितना कम है। वास्तव में, समाज और प्रकृति ऋण से हम कभी उऋण नहीं हो सकते। हम थोड़ा सा भी समाज को देते हैं तो अपेक्षा करते हैं कि हमारा नाम और फोटो छपे। परन्तु जिस–जिस ने हमें सिखाया है क्या उन्होंने कभी अपेक्षा की है कि उनका नाम कहीं छपे? वे हमसे बड़े दाता हैं फिर भी उनका नाम कहीं नहीं, किन्तु इसके विपरीत हम मंदिर में एक घंटी भी दान करे दें तो अपेक्षा रहती है कि उस पर भी बड़े–बड़े अक्षरों में हमारा नाम लिखा जाए। वास्तव में हम देने वाले हैं कौन ? यह तो किसी और का दिया हुआ है। फिर हमारा नाम क्यों ? तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा....।

❐

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सी–91, निराला नगर, लखनऊ – 226020 (उ.प्र.)
फोन–फैक्स : 0522-4001837, 2789406, E-mail : bdsnyas@yahoo.co.in

सहकार निवेदन

पिछले 24 वर्षों में न्यास के सेवा कार्यों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुयी है, उसमें किसी न किसी रूप में आपका ही स्नेह सहयोग रहा है। न्यास के पास आर्थिक संसाधनों की बहुत कमी है। न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्य प्रभावित न हो अतः आयस्रोत को बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा प्रस्थापित **कार्पस फण्ड** से प्राप्त होने वाली ब्याज राशि भी पूरी नहीं होती। अतएव लक्ष्य तक पहुँचने हेतु कार्पस फण्ड भी बढ़ाना होगा। समाज सेवा के क्षेत्र में गौरव को बढ़ाने वाले इस महत कार्य में जन-जन का सहयोग एवं सहकार अपेक्षित है। आप सभी उदारमना सेवाभावी महानुभावों के सहकार से ही यह न्यास सेवारत है।

न्यास के सेवा कार्यों हेतु आप इस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं–

1. **सचल चिकित्सा सेवा के लिए**– रु. 11,000/- की मासिक धनराशि का सहयोग करके, एक सेवा बस्ती में अपनी ओर से निःशुल्क चिकित्सा सुविधा एवं औषधि का वितरण कराना।
2. **नेत्र चिकित्सा शिविर के लिए**– रु. 2000/- की धनराशि का सहयोग करके एक **मोतियाबिन्द पीड़ित** नेत्र रोगी का आपरेशन करवाकर नेत्र ज्योति प्रदान करना।
3. **विकलांग सहायता शिविर के लिए**– रु. 1,000/- से 6,000/- तक की राशि दे करके, एक विकलांग बन्धु की सहायता में उनके लिए कृत्रिम अंग, उपकरण, वैशाखी, ट्राईसाइकिल, ह्वील चेयर आदि की व्यवस्था कराना।
4. **कार्पस फण्ड (स्थायी निधि) के लिए**– रु. 10,000/- से अधिक की धनराशि का अर्पण करके, न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों में उत्प्रेरक बनना।
5. **छात्रवृत्ति के लिए**– प्राथमिक रु. 3000/-, माध्यमिक रु. 5000/-, हाईस्कूल रु. 7000/-, इंटरमीडिएट रु. 8000/-, आईटीआई/डिप्लोमा रु. 10,000/-, स्नातक रु. 10000/-, परास्नातक रु. 12000/-, प्रतियोगी परीक्षाएँ रु. 15000/-, इंजीनियरिंग रु. 18000/- मेडिकल के छात्रों को रु. 20000/- की वार्षिक छात्रवृत्ति का सहयोग करके न्यास के माध्यम से पूर्वांचल और वनवासी क्षेत्र के बालकों के लिए वार्षिक छात्रवृत्ति भिजवाना।
6. **सेवा चेतना अर्द्धवार्षिक पत्रिका के लिए**– रु. 1,200/- की आजीवन सदस्यता ग्रहण करके तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग करके सहायता करना।
7. **सेवा संवाद मासिक के लिए**– रु. 2,000/- की आजीवन एवं रु. 5,000/- की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके सहयोग करना।
8. **माधव सेवा आश्रम के लिए**– रु. 5,00,000/- का दान कर, एक कक्ष के निर्माण के द्वारा अपने किसी सम्बन्धी की स्मृति को स्थायी बनायें।

न्यास को सेवा कार्यों के लिए दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5)(vi) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। अप्रवासी भारतीय भी दान दे सकते हैं। कृपया अपनी दानराशि चेक व ड्राफ्ट **भाऊराव देवरस सेवा न्यास** के पक्ष में जो **लखनऊ** में देय हो, अपने पैन नं. व पते के साथ भेज सकते हैं।

समाज सेवा-कार्यों हेतु आपसे अनुरोध है कि न्यास को यथा सम्भव अधिकाधिक सहयोग करें। दान की राशि आप सीधे हमारे खाते में भी जमा कर सूचित कर सकते हैं।

बैंक ऑफ इण्डिया, निरालानगर, लखनऊ बैंक खाता सं. **680610100009948 IFSC: BKID0006806**

भारतीय स्टेट बैंक, निरालानगर, लखनऊ बैंक खाता सं. **30448433657 IFSC: SBIN0003813**

आशा है सेवा के इस पुनीत कार्य में आप सभी अवश्य सहभागी बनेंगे।

समाचार

सेवा और समर्पण से सुसज्जित श्रेष्ठ परंपराओं का देश भारत

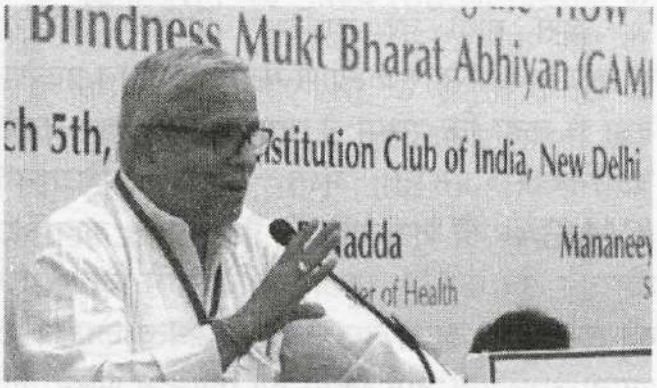

परम पूज्य श्री गुरूजी की जयंती के उपलक्ष्य में समदृष्टि क्षमता विकास एवं अनुसंधान मंडल (सक्षम) के तत्वाधान में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह भैय्याजी जोशी द्वारा "कॉर्नियल अन्धता मुक्त भारत अभियान" (CAMBA) का शुभारंभ न्यू स्पीकर हॉल, कॉन्स्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली में किया गया. भैया जी जोशी ने सक्षम के मानवीय अभियान CAMBA की शुरुआत करने के बाद कहा कि सक्षम ने बहुत बड़ा संकल्प लिया है। सक्षम ही संकल्प पूरा करने की क्षमता रखने वाला एक मात्र संगठन है। सक्षम नाम ही संकल्प पूरा करने वाला है। सक्षम अपने आप में ताकत है, जो सभी शक्तियों का समन्वय कर अपने साथ में लेकर चलता है। सक्षम अपने साथ सभी कार्यों को भी सुचारू रूप से लेकर चलता है। उन्होंने कहा कि साथ में और भी चलने वाले जुड़ें, सक्षम का यह प्रयास नित्य रहे। क्योंकि, इस प्रकार से सक्षम को आवश्यकता भी है। आगे याद करते हुए गर्व से ओत–प्रोत होकर भैय्या जी ने कहा कि आज एक शुभ मुहूर्त भी है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक परम पूज्य श्री गुरुजी की आज हिन्दू पंचांग के अनुसार जन्म तिथि भी है।

उन्होंने कहा कि जब इस क्षेत्र में नागपुर में कार्य की शुरूआत हुई थी। तो सबसे पहला नेत्र बैंक जो बना था, उसका नाम माधव नेत्र बैंक था। कहते हैं न जब समाज सोच लेता है और जब वह सोच समाज का संकल्प बन जाता है। तो क्या होता है, मालूम है ? वह मानवीय सेवा बन जाता है। तो स्वाभाविक है कि वो मानवीय सेवा अच्छा ही होगा। मैं समझता हूं कि इस देश के अंदर अपार प्रकार की क्षमता विद्यमान है। बस, उसे हमें पहचानने और सही दिशा देने की आवश्यकता है। क्योंकि जब सही दिशा मिल जाएगी, तो मंजिल भी प्राप्त हो जाती है। एक बात ध्यान रहे, जब मन शक्ति बन जाए, तो उसे कोई ताकत आगे बढ़ने से नहीं रोक पाता है। सक्षम समाज में जिस प्रकार के विषय को लेकर आगे चल रहा है वो अपने आप में एक क्षमता है। क्या इससे भी बड़ी कोई मानवीय सेवा हो सकती

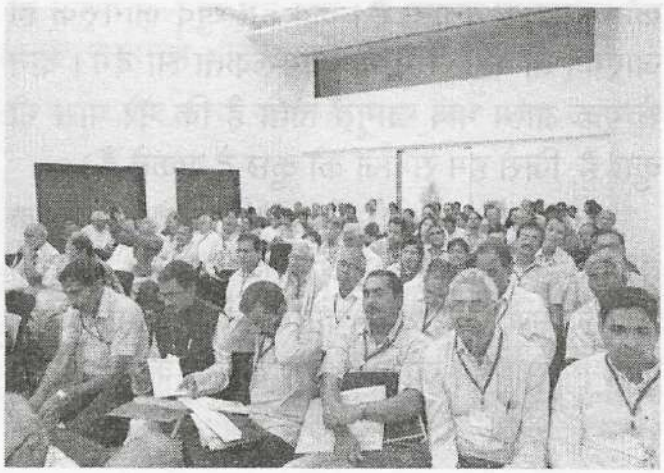

है कि एक इन्सान को उसकी जिन्दगी में वो रोशनी दे देना, जिससे वो समस्त समाज को देख सके ?

सरकार्यवाह जी ने कहा कि इस अभियान में न तो वैज्ञानिक निर्मित कृत्रिम वस्तुएं माध्यम हैं और न ही भौतिक साधन माध्यम है। यह एक अद्भुत मिसाल विश्व के सामने पेश होने वाली है कि जब मनुष्य ही इस अभियान (CAMBA) का माध्यम बनने वाला है। तो क्यों न इसे संकल्पित होकर और आगे बढ़ाया जाए। यह हम मनुष्य के हाथ में है कि हम मानव इस मानवीय अभियान को कितना सफल बना सकते हैं ? इस संकल्प का कोई आधार है तो वो इस देश का सामान्य व्यक्ति है. दान और डोनेशन में भी अंतर है। हमें डोनेशन नहीं, हम मनुष्य को अपने ही मानव समाज के लिए दान करना है, सेवा और समर्पण के भाव से। सेवा और समर्पण से सुसज्जित श्रेष्ठ परम्पराओं को जीने वाली धरती का सबसे प्यारा देश भारत है। दान का महत्त्व व्यक्ति की भावना से होता है। भावना श्रेष्ठ है तो वह दान भी श्रेष्ठ होता है।

अन्नदान का महत्त्व है. पर, अन्न दान का दायरा कितना है ? मैं इसे काट नहीं रहा हूं, मैं अन्न दान के महत्व की बात कर रहा हूं। अन्न दान एक समय की भूख मिटा सकता है, उसी प्रकार ज्ञान दान एक व्यक्ति को दिशा देने वाला दान होता है और अंग दान कई व्यक्तियों के जीवन में खुशियां भरने वाला होता है। कहते हैं न "जीते–जीते रक्त दान और जाते–जाते अंगदान।" तो हमें अपने आप को जागरूक बनाना है। जब हम खुद जागरुक हो जाएंगे। तो समाज में भी जागरूकता ला देंगे। दान से एक आत्म भाव जागृत होता है कि मेरे पास भी कुछ है, जिसे हम समाज को कुछ दे सकते हैं।

नेत्र दान के क्षेत्र में जागृति अति–आवश्यक है। क्योंकि, यही एक मात्र मार्ग है अंधत्व से मुक्ति का। जिससे एक व्यक्ति को वो सुख, सौभाग्य और पुण्य मिलता है। जो उसे इस दुनिया की किसी भी सांसारिक, भौतिक एवं कृत्रिम वस्तु से प्राप्त नहीं हो सकता। इससे दान प्राप्त करने वाले व्यक्ति को भी सुख और सौभाग्य प्राप्ति होती है, जो उसके साथ आजीवन रहता है।

इस मौके पर उपस्थित विशिष्ट अतिथि स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. जगत प्रकाश नड्डा ने कहा कि सक्षम ने शुभ दिन पर शुभ कार्य "कॉर्नियल अन्धता मुक्त भारत अभियान" (CAMBA) की शुरूआत की है। उन्होंने कहा कि यह हम सब के लिए खुशी का विषय है कि NGO की तरह कार्य करते हुए सक्षम ने अंधत्व के क्षेत्र में अपना अभूत्वपूर्व नाम किया है। जब हम सक्षम की बात करते है तो पाते हैं कि इसने धरती से जुड़ा हुआ प्रयास किया है। जो सक्षम की इच्छा–शक्ति एवं दृढ़ता को दर्शाता है। यही सक्षम का बैकबोन भी है। उन्होंने मौजूदा सरकार और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की पहल को बताया कि देश के सभी राज्यों के सभी जिलों में से उन 184 जिलों को उठाया है जो स्वास्थ्य की। दृष्टिकोण से कमजोर थे। हमने उसे फंडिंग के साथ और स्पेशल 30þ फंडिंग की सहायता दी है, ताकि उस जिले के भी सभी वासी स्वस्थ हो जाएं।

"कॉर्नियल अन्धता मुक्त भारत अभियान" (CAMBA) के शुभारंभ के मौके पर दिल्ली प्रान्त के संघचालक कुलभूषण आहुजा जी, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार के पूर्व सचिव (IAS) लव वर्मा, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. एसएस अग्रवाल, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार में उप सचिव धारित्री पंडा, राष्ट्रीय अध्यक्ष सक्षम डॉ. दयाल सिंह पवार जी और झंडेवालान मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष नवीन कपूर जी उपस्थित रहे। अंत में धन्यवाद ज्ञापन महामंत्री (दि.प्रा.) एवं राष्ट्रीय कार्यकारणी सदस्य सक्षम ललित आनंद जी ने किया।

325 स्थानों पर 35 हजार लोगों का निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण

पटना दशम गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज के 352वें प्रकाश पर्व पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सेवा विभाग और एन.एम.ओ. के संयुक्त प्रयास से बिहार के 325 केंद्रों पर 35 हजार लोगों का निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। इन सभी केंद्रों पर 350 प्रशिक्षित चिकित्सकों ने अपनी सेवाएं दीं। इनके साथ 952 मेडिकल के विद्यार्थी भी पूरी तत्परता के साथ जुटे थे। सेवा भारती के 2500 स्वयंसेवक कार्यक्रम को सफल बनाने में जुटे थे।

केंद्रों के माध्यम से 35 हजार लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण कर उन्हें आवश्यक परामर्श दिए गए। केंद्रों पर मुफ्त में दवा का वितरण भी किया गया।

एन.एम.ओ. के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. विजेंद्र ने बताया कि बिहार से रुग्णता समाप्त करने के लिए बिहार का चिकित्सक समुदाय संकल्पित है। सरकार की अपनी सीमाएं हैं। समाज के माध्यम से प्रति वर्ष संस्था द्वारा यह कार्यक्रम किया जाता है। सेवा भारती के कार्यकर्ताओं की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सेवा विभाग के सहयोग के बिना इतना बड़ा कार्यक्रम कर पाना असंभव था। यह प्रकल्प प्रति वर्ष आयोजित होगा।

मूल कर्तव्य

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह–

1. संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे।
2. स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों का हृदय में संजाए रखे और उनका पालन करे।
3. भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसको अक्षुण्ण रखे।
4. देश की रक्षा करे और आवाहन किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करें।
5. भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं।
6. हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे।
7. प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्द्धन करे तथा प्राणि मात्र के प्रति दयाभाव रखे।
8. वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें।
9. सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहें।
10. व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए, प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू लें।

जो स्वयं के लिए कुछ नहीं करता, वह ऋषि है

❑ भैयाजी जोशी

चित्रकूट में ग्रामोदय मेला :

चित्रकूट भारत रत्न नानाजी देशमुख द्वारा स्थापित दीनदयाल शोध संस्थान समाज जीवन के सभी पहलुओं पर कार्य कर रहा है। भारत रत्न नानाजी देशमुख की पुण्यतिथि पर ग्रामीणजनों को कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन, पशुपालन जैसे अन्य क्षेत्रों की विविध गतिविधियों एवं योजनाओं व प्रगति की जानकारी देने हेतु कार्यक्रमों का आयोजन करता है। इस वर्ष भी विरासत, संस्कृति एवं विकास को प्रदर्शित करने वाली प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसके अन्तर्गत सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं के साथ–साथ फूड कॉर्नर, मनोरंजन, खादी ग्रामोद्योग के उत्पादों का स्टॉल, मेले का आकर्षण रहा, साथ ही विभिन्न सेमिनारों का आयोजन भी किया गया। ग्रामोदय मेला–आदि ग्राम कुंभ में पहली बार जनजातीय कार्य मंत्रालय भारत सरकार की संस्था ट्राइफैड से जुड़े 20 राज्यों से लगभग 200 आदिवासी कलाकारों ने हाथों से बनाई हस्त कला के नायाब उत्पादों के साथ प्रतिभाग किया।

24–27 फरवरी तक आयोजित चार दिवसीय ग्रामोदय मेला–आदि ग्राम कुंभ का समापन संस्थान के विवेकानन्द सभागार में सामूहिक राष्ट्रगान के साथ हुआ। समापन सत्र में म.प्र. की राज्यपाल आनन्दीबेन पटेल के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह भैयाजी जोशी, दीनदयाल शोध संस्थान के अध्यक्ष वीरेन्द्रजीत सिंह, सूर्यप्रताप साही कृषि मंत्री उ.प्र. शासन, अतुल जैन प्रधान सचिव दीनदयाल शोध संस्थान सहित अन्य मंचासीन रहे। आदि कुंभ की भूमिका संस्थान के प्रधान सचिव अतुल जैन ने रखी।

एक मुट्ठी अनाज एवं एक रुपया सहयोग से विशाल भण्डारा

भारत रत्न राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख ने आम जनता की पहल एवं पुरूषार्थ से चित्रकूट में सामाजिक पुनर्रचना का जो कार्य खड़ा किया, उसमें उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी सुनिश्चि करने का प्रयास किया था। उनकी उसी परंपरा को बरकरार रखने के लिये नानाजी की 9वीं पुण्यतिथि पर विशाल भंडारा आम जनमानस के एक मुट्ठी अन्न और 01 रुपए के सहयोग से सम्पन्न हुआ। जिसमें दीनदयाल शोध संस्थान के कार्यकर्ताओं ने टोली बनाकर प्रत्येक गांव एवं घर–घर तक पहुंचकर ग्रामोदय मेला–आदि ग्राम कुंभ का आमंत्रण दिया और सहयोग की अपेक्षा की। जिसमें सभी ग्रामवासियों एवं नगरवासियों अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

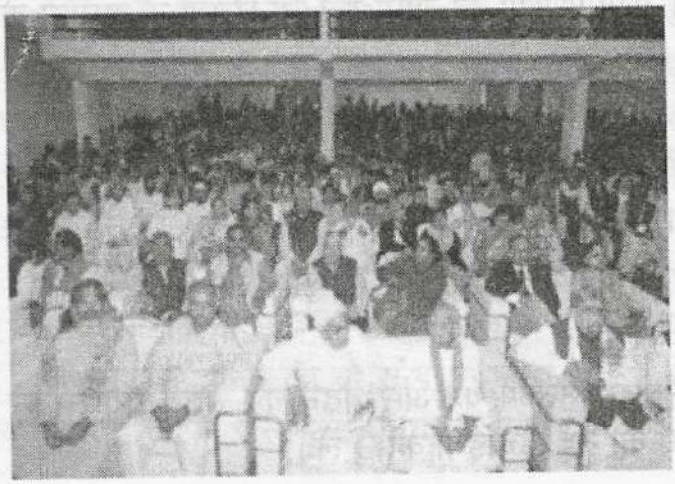

निःस्वार्थ सेवा भाव ही कामयाबी का मूल मंत्र

❑ शेखर अवस्थी

दूसरों के प्रति निःस्वार्थ सेवा का भाव रखना ही जीवन में कामयाबी का मूलमंत्र है। निःस्वार्थ भाव से की गई सेवा से किसी का भी हृदय परिवर्तन किया जा सकता है। हमें अपने आचरण में सदैव सेवा का भाव निहित रखना चाहिए, जिससे अन्य लोग भी प्रेरित होते हुए कामयाबी के मार्ग पर अग्रसर हो सकें। सेवारत व्यक्ति सर्वप्रथम अपने, फिर अपने सहकर्मियों व अपने सेवायोजक के प्रति ईमानदार हो। इन स्तरों पर सेवा भाव में आई कमी मनुष्य को धीरे–धीरे पतन की ओर ले जाती है। सेवा भाव ही मनुष्य की पहचान बनाती है और उसकी मेहनत चमकाती है। सेवाभाव हमारे लिए आत्मसंतोष का वाहक ही नहीं बनता बल्कि संपर्क में आने वाले लोगों के बीच भी अच्छाई के संदेश को स्वतः उजागर करते हुए समाज को नई दिशा व दशा देने का काम करता है। जैसे गुलाब को उपदेश देने की जरूरत नहीं होती, वह तो केवल अपनी खुशबू बिखेरता है। उसकी खुशबू ही उसका संदेश है। ठीक इसी तरह खूबसूरत लोग हमेशा दयावान नहीं होते, लेकिन दयावान लोग हमेशा खूबसूरत होते हैं, यह सर्वविदित है। सामाजिक, आर्थिक सभी रूपों में सेवा भाव की अपनी अलग–अलग महत्ता है। बिना सेवा भाव के किसी भी पुनीत कार्य को अंजाम तक नहीं पहुंचाया जा सकता। सेवा भाव के जरिए समाज में व्याप्त कुरीतियों को जड़ से समाप्त करने के साथ ही आम लोगों को भी उनके सामाजिक दायित्वों के प्रति जागरूक किया जा सकता है। असल में सेवा भाव आपसी सद्भाव का वाहक बनता है। जब हम एक–दूसरे के प्रति सेवा भाव रखते हैं तब आपसी द्वेष की भावना स्वतः समाप्त हो जाती है और हम सभी मिलकर कामयाबी के पथ पर अग्रसर होते हैं। सेवा से बड़ा कोई परोपकार इस विश्व में नहीं है, जिसे मानव सहजता से अपने जीवन में अंगीकार कर सकता है। प्रारंभिक शिक्षा से लेकर हमारे अंतिम सेवा काल तक सेवा ही एक मात्र ऐसा आभूषण है, जो हमारे जीवन को सार्थक सिद्ध करने में अहम भूमिका निभाता है। बिना सेवा भाव विकसित किए मनुष्य जीवन को सफल नहीं बना सकता। हम सभी को चाहिए कि सेवा के इस महत्व को समझें व दूसरों को भी इस ओर जागरूक करने की पहल करें।

जेके मॉडर्न एकेडमी धामपुर

सेवा के बदले प्रसिद्धि नहीं

प्रसिद्धि की इच्छा हर मनुष्य की होती है। परन्तु सेवा के बदले प्रसिद्धि की अपेक्षा नहीं होनी चाहिए। आज सेवा भारती, राष्ट्रीय सेवा भारती और इससे सम्बद्ध एक हजार से अधिक संस्थाओं द्वारा कितने प्रकार के सेवा कार्य कर संचालित हैं। ये सभी संगठन एवं संस्थाएं मिलकर जो सेवा कार्य कर रहे हैं उनकी संख्या बहुतों को पता नहीं है। हालांकि मैं संख्या पर नहीं जाता, क्योंकि मुद्दा संख्या का नहीं, भाव का है, मात्रा का नहीं, गुणवत्ता का है। महत्वपूर्ण यह है कि कितने लोग सेवा करते हैं, क्या सेवा करते हैं और कैसे सेवा करते हैं।

सिच्छक हौं
सिगरे जग को
तिय ताको कहा
अब देति है सिच्छा।

जे तप कै
परलोक सुधारत,
सम्पति की तिनके
नहिं इच्छा।।

मेरे हिये हरिके
पद पंकज
बार हजार लै
देखु परीच्छा।

औरन को धन
चाहिये बावरि,
बाभन के धन
केवल भिच्छा।।

(सुदामाचरित)

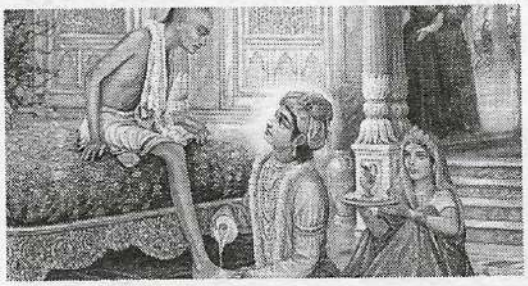

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्र

सेवा संवाद

सम्पादकीय कार्यालय : **भाऊराव देवरस सेवा न्यास**
सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020
दूरभाष : 0522-4001837, 2789406 मोबाइल : 9793120738
Email : sewasamwad@gmail.com

ग्राहक सदस्यता प्रपत्र

सेवा में,

प्रबन्धक,
'सेवा संवाद'
भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020

महोदय,

मैं/हमारी संस्था आपकी मासिक पत्रिका सेवा संवाद का वार्षिक/जीवन सदस्य बनने का इच्छुक हूँ/हैं। इस निमित्त वार्षिक शुल्क **200/-** अथवा आजीवन शुल्क **2000/-** रुपये **'सेवा संवाद'** के पक्ष में नकद/बैंक ड्राफ्ट/चेक सं. ..... दिनांक ..... बैंक .... द्वारा भेज रहा हूँ/रहे हैं। कृपया स्वीकारें। प्राप्ति की रसीद तथा पत्रिका हमारे निम्न पते पर प्रेषित करने की कृपा करें।

ह0 आवेदक

हमारा पता है :
नाम : .....
पता : .....
.....
.....
जिला: .....
प्रदेश : ..... पिनः .....
मोबाइलः .....

आलोक : चेक/ड्राफ्ट 'सेवा संवाद' के पक्ष में जारी करें अथवा बैंक आफ इण्डिया, निरालानगर, लखनऊ के खाता सं. 680610110000102 (IFSC : BKID0006806) में सीधे जमा कर जमा पर्ची की छायाप्रति के साथ सूचित करें।

परेड में बेहतर प्रदर्शन पर 43 स्वयंसेवकों का सम्मान

नागरिक सुरक्षा संगठन की ओर से चांसलर क्लब में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इसमें गणतंत्र दिवस के मौके पर परेड में बेहतर प्रदर्शन करने वाले 43 प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में नागरिक सुरक्षा मंत्री अनिल राजभर, प्रमुख सचिव राजन शुक्ला महानिदेशक जवाहर लाल त्रिपाठी एवं आइजी अमिताभ ठाकुर मौजूद रहे।

नागरिक सुरक्षा मंत्री अनिल राजभर ने कहा कि वास्तव में टीम ने प्रशंसनीय कार्य किया है। उसके लिए वे सम्मान के पात्र हैं। स्वयंसेवको को किसी भी तरह की दिक्कत नहीं होने दी जाएगी। प्रमुख सचिव राजन शुक्ला ने कहा कि गणतंत्र दिवस की परेड में वार्डेन ने 25 दिन के प्रशिक्षण के बाद बेहतरीन कार्य किया। महानिदेशक जवाहर लाल त्रिपाठी ने वार्डेन से देश की अखंडता बनाये रखने के लिए सदैव तत्पर रहने का आह्वान किया। अमिताभ ठाकुर ने पूरी टीम की कार्यशैली की प्रशंसा की। चीफ वार्डेन अमरनाथ मिश्र ने अतिथियों का सम्मान किया। उन्होंने कहा कि जो कार्य सिविल डिफेंस टीम का दिया गया उसे वार्डेन ने बखूबी निभाया। इस मौके पर कंट्रोलर जयराज तोमर, डिप्टी चीफ वार्डेन जीएस सेटी, आरके चौहान समेत कई सिविल डिफेंस के पदाधिकारी मौजूद रहे।

इनका हुआ सम्मान :

अमरनाथ मिश्र, जीएस सेठी, राजेश सिंह चौहान, एससी दीक्षित, आलोक सक्सेना, अरविंद कुमार मिश्र, प्रियंका दीक्षित, नफीस अहमद, रविबुद्ध राजा, मो. तारिक सिद्दीकी, अमर कुमार, वैभव स्वर्णकार, सुजीत कुमार भारती, हेमंत कौशल, रंजीत कुमार, ऐश्वर्य शर्मा, अंकित कुमार, योगेन्द्र कुमार, नितिन कुमार, आकाश कुमार, पवन कुमार बहेलिया, शाहिद, रंजीत, आकाश कनौजिया, मो. सुजैज, सज्जन अली, अनिल कुमार, मुकेश, हरीश, संजीव कुमार, संतोष सिंह, राजकुमार प्रसाद, रामगोपाल सिंह, गुरुनीत, महेश कुमार, हबीब अंसारी, संतोष, सतीशपाल, कृष्ण कुमार, पुनीत अग्रवाल, प्रदीप शुक्ला, आरजे भारती, चिन्मय द्विवेदी, पारस, सचिन को सम्मानित किया गया।

डॉ. हेडगेवार के विचार

आज भी कितने प्रासंगिक

❑ शेखर अवस्थी

पूज्य डॉ. हेडगेवार अपने समाज के पतन का मूल–कारण जहाँ एक ओर राष्ट्रीय–संगठन का अभाव मानते थे, वहाँ सामान्य व्यक्ति के जीवन में सद्‌गुण संपदा–वैयक्तिक एवं सामाजिक चरित्र का ह्रास देख–देख कर भी उनके मन में बड़ी व्यथा होती थी। सद्‌गुणों के संस्कार को ही वे सच्ची शिक्षा समझते थे। यद्यपि उन्होंने स्वयं कोई नया शिक्षा–आन्दोलन नहीं चलाया और न ही कोई युगानुकूल शिक्षा–नीति निर्धारित करने का प्रयत्न किया, फिर भी उनकी रुचियाँ और उनकी इस संबंध की कल्पनाएं उनके व्यवहार तथा निर्णयों से स्पष्ट होती हैं। उनके वे विचार कितने शास्त्र शुद्ध और तर्क–सम्मत थे और आज भी वे कितने प्रासंगिक अथवा युगानुकूल हैं– इसका मूल्यांकन आंखे खोलने वाला है।

हिन्दू संस्कार, आधुनिक विज्ञान

शैशव में उन्होंने बहुत शुद्ध और मधुर स्वर में वेद मन्त्रों और श्लोकों को उच्चारण का अभ्यास किया था। प्राथमिक शिक्षण यथाक्रम चालू रहते हुए, चेचक के प्रकोप से मुक्ति के तुरन्त बाद, उनका यज्ञोपवीत संस्कार हुआ, संध्या–पूजा–रुद्रपाठ आदि ब्रह्म कर्म नित्य नियम से सीखे, यहाँ तक कि 'केशव के वेद–पठन में स्वच्छ और शुद्ध उच्चारण की प्रशंसा करते माता–पिता की छाती गर्व से फूल जाती थी।'

संयम तथा व्यायाम

छोटी बाल्यावस्था से ही कठोर व्यायाम का अभ्यास करना चाहिए। यही भारतीय शिक्षा पद्धति है। केशव, अंग्रेजी स्कूल में भरती से भी पहिया घुमाते हुए मीलों दौड़ लगाता था और बड़े भाई (पहलवानी के शौकीन) महादेव शास्त्री ने अखाड़े में कई मलखंभ की पकड़े भी उसे सिखा दी थीं। स्कूल के दिनों में उसकी मित्रमंडली जमकर 'मुगल–मराठे' का खेल नागफनी के जंगल में मिलकर खेलती थी। घंटों तैरने का अभ्यास भी केशव ने युवावस्था के पहले चरण में कर लिया था। कलकत्ता मेडिकल कॉलेज में केशव हेडगेवार 'हृष्ट पुष्ट स्वास्थ्य की साकार मूर्ति थे। इसी कारण वे बाढ़ और बीमारी में सेवा कार्य कर पाये।'

स्वयंसेवकों में यही कठोरता, कर्मशीलता, परिश्रम और कष्ट–सहन शक्ति का अभ्यास निर्माण करने के लिए संघ में शारीरिक कार्यक्रमों की कस कर योजना उन्होंने की थी।

युग दृष्टि बोध

परन्तु मित्रों से सुने राजनीति के उद्‌गार उसकी बातों में बचपन से आने लगे थे, 'केसरी का वाचन भी वह अत्यन्त चाव से करता था। केशव की यह अभिरुचि माता–पिता के ध्यान में आये बिना कैसे रह सकती थी ? उनकी इच्छा 'कम से कम एक पुत्र को नयी शिक्षा देने की भी रही होगी, सबसे छोटे पर प्यार भी रहा होगा, बुद्धि की प्रखरता पर विश्वास भी रहा होगा। इन्ही कारणों से उसे 'वेदशाला' में नहीं नील सिटी हाईस्कूल में भरती कराया गया। बाद में उसका डॉक्टरी–शिक्षा के लिए नेशनल मेडिकल कॉलेज, कलकत्ता जाना भी ज्ञान–विज्ञान की ओर प्रबल अभिरुचि का परिचायक है। उस संघर्ष में अनेक अभावों के बीच उन्होंने कितने घोर परिश्रम से अध्ययन किया–यह भी ध्यान देने योग्य है।'

राष्ट्र के लिए सर्वस्य–समर्पण करने वालों को भी वे उच्च शिक्षा ग्रहण करने की प्रेरणा ही नहीं देते थे, अपितु अनेक प्रकार से सहायता भी करते थे। विद्यार्थियों की एक बैठक के समारोह में उन्होंने कहा था, 'आनन्द (उत्तीर्ण) होने पर संघ को क्या–क्या देंगे, इसका जो आश्वासन दिया है, उसे ध्यान में रखिये। अनुत्तीर्ण होने पर दंड देना पड़ेगा– यह मत भूलिये!

1937 में जिन चुने हुए कार्यकर्ताओं को उत्तरी हिन्दुस्तान में संघ कार्य के लिए भेजा गया था, उनमें से अधिकांश को कॉलेज की पढ़ाई आगे करने के लिए भेजा था।

दिल्ली में तो 1932 में ही कृष्णराव लांबे को

भेजा था। लांबे स्नातक की परीक्षा में असफल होकर लौटे और डॉक्टर जी से बिना मिले अपने घर उमरेड चले गये। मिलने पर डॉक्टर जी ने बड़े असंतोष के साथ कहा था, 'तुम दिल्ली से क्यों आये? पैसे नहीं थे, तो मैं देता।'

स्वाध्याय, प्रवचन, गोष्ठी

डॉ. जी के जीवन में स्वाध्याय मंडल, अध्ययन –केन्द्र, विचार–विमर्श, चर्चा, प्रवचन, गोष्ठी तथा इन सबको समावेश करने वाली बैठकों का (जिन्हें पहले मजाक में नरेन्द्र मंडल कहते थे) घनिष्ठ संपर्क के हेतु उपयोग खूब देखने को मिलता है।

संघ–स्थापना से पूर्व उन्होंने कुछ दिनों 'खण्डोवा के मंदिर' में कवि परमानन्द कृत 'शिव भारत' पर प्रवचन भी किये थे। गीता के एकाध श्लोक या स्वामी रामदास के एकाध वचन से आरम्भ होकर प्रवचन और उसके बाद का प्रश्नोत्तर अधिवेशन स्वाधीनता तथा तिलक की तेजस्वी राजनीति के विषय में ही चलता था।

संघ में चर्चा, बैठक, रात्रि–प्रवचन, अनौपचारिक गपशप आदि सभी कार्यक्रम परस्पर विचार विनिमय के द्वारा ज्ञानसंवर्धन के हेतु विकसित हुए हैं। व्यर्थ के तर्क–वाद से बचते हुए हार्दिक घनिष्ठता तथा सामंजस्य के आधार पर भी ही यह अध्ययन प्रक्रिया चलती है। इस प्रणाली की सफलता स्वयं प. पू. गुरुजी के शब्दों में :'उनका वह भाषण मेरे अन्दर रिसता गया। मेरे चारों ओर विद्वता का बड़ा आवरण था। तर्क में किसी से मात न खाने की मेरी ख्याति थी। बीस पचीस हजार पुस्तकें पढ़ रखी थी–पर डॉ. जी के हृदय की तड़प मेरे अन्तःकरण में कैसे रिसी। तत्व के संबंध में विचार न करते हुए बीच–बीच में न मिलता हुआ, उनका जीवन को निश्चित दिशा मिल गयी'।

शाखा के अनौपचारिक शिक्षा–संस्कार

संघ–स्थापना के आरम्भ के दिनों में स्वयंसेवक आग्रह पूर्वक व्यायाम में जाते थे। शुरू–शुरू में संघ को 'डॉ. हेडगेवार का अखाड़ा' ही समझा जाता था। परन्तु धीरे–धीरे अनुभव हुआ कि इससे काम नहीं चलेगा, अतः नियमित शाखा और उसके कार्यक्रमों की योजना हुई।

संघ स्थान के संस्कार कितने शिक्षाप्रद होते हैं–यह हमसब जानते हैं और अनुभव करते हैं। वहाँ की नियमितता, व्यवस्था, दक्षता, परम पवित्र भावना, ध्वज के फहराने प्रभाव, संस्कृत आज्ञाएं, स्वयं–स्फूर्त अनुशासन, संगठन, एकता, एकात्मा, राष्ट्र–शक्ति, समर्पण, अडिग ध्येय–निष्ठा आदि के गुण बताने के स्थान पर हृदयंगम करने के तत्व अधिक हैं। प्रारम्भ के वर्षों से अब तक अनेक अवरोधों के बीच इस अनौपचारिक शिक्षा ने हिन्दू समाज में एक आंतरिक–परिवर्तन कर दिखाया है। आज स्वयं को 'हिन्दू' कहते किसी को लज्जा अनुभव नहीं होती–अनेक लोग 'गर्व' अनुभव करते हैं, हिन्दू' का संगठन हो सकता है और यह आवश्यक है यह विश्वास हुआ है हिन्दू हिन्दू एक है यह अनुभूति अनेक अभियानों और प्रकल्पों के माध्यम से समाज के सभी स्तरों पर होने लगी है आदि आदि सामाजिक परिवर्तन एवं व्यक्ति–व्यक्ति के दृष्टिकोण में परिवर्तन इस अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से हुआ है।

संगठन कर्ता उच्च–शिक्षा सम्पन्न हो

यद्यपि डॉ. हेडगेवार पुस्तक–ज्ञान से शिक्षा (या संस्कार) को भिन्न तथा श्रेष्ठ मानते थे, तो भी वे समाज–कार्य का दायित्व लेने के लिए उच्च शिक्षा को आवश्यक समझते थे। इसी कारण उग्र देश भक्ति तथा क्रान्तिकारी विचारों से उद्वेलित होने पर भी, उन्होंने स्वयं कई वर्ष लगा कर डॉक्टरी का अध्ययन किया, भले ही उसका उपयोग धनार्जन के लिए बिलकुल नहीं किया। उस काल में मिडिल या एंट्रेस पास लोगों को अच्छी नौकरियाँ मिल जाती थीं। परन्तु वे नील सिटी स्कूल से निकाले गए तो राष्ट्रीय शाला यवतमाल में जाकर पढ़े वह भी सरकार की कोप दृष्टि से बन्द हो गई तो पूना जाकर प्राइवेट पढ़े और इस सारे संघर्ष के बीच अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण हुए। कलकत्ता के नेशनल मेडिकल कॉलेज में भी इसीलिए उन्होंने प्रवेश लिया था, कठिनाई आई तो श्री आशुतोष मुखर्जी से भी सहायता ली, कॉलेज छात्रावास–जीवन का प्रत्यक्ष अनुभव करने के लिए अनेक कठिनाइयाँ झेलते हुए भी विद्यार्थियों के 'लॉज' में ही रहे।

डॉ. हेडगेवार सेवा समिति ने बदली नंदूरबार (महाराष्ट्र) की तस्वीर

खेती से अब गुजारा मुश्किल है, बच्चों का पेट नहीं भर सकते! अब अपना गांव छोड़कर कमाने के लिए शहर जाना ही पड़ेगा। यह कहानी किसी एक किसान की नहीं, महाराष्ट्र के नंदूरबार जिले के सैंकड़ों किसानों के जीवन की कड़वी सच्चाई थी। पांच हजार पैंतीस किलोमीटर में फैले 67% जनजाति जनसंख्या वाले नंदूरबार में किसान भूखे मरने पर मजबूर थे। पर, अब अपने बुरे दिनों से बाहर निकल कर यह शनैः शनैः विकास के पथ पर दौड़ रहे हैं। गरीबी और कुपोषण को धीरे धीरे ही सही, लेकिन जनजाति समाज ने पीछे हटाना सीख लिया है और यह सब संभव हुआ डॉक्टर हेडगेवार सेवा समिति के अथक प्रयासों से।

समिति ने खेती के तरीके में बदलाव कर व किसानों को प्रशिक्षित कर न सिर्फ उन्हें गरीबी के दलदल से बाहर निकालने का यशस्वी प्रयास किया, बल्कि उनके बच्चों को भी पढ़ाया। डॉ. गजानन डांगे, ललित बाल कृष्ण पाठक, रंगनाथ रुंझझि नवले जैसे स्वयंसेवकों के प्रयासों से 27 बरस पहले गठित हुई समिति ने 30 गांव गोद लेकर वहां की दशा व दिशा बदल दी।

कभी महाराष्ट्र के सबसे पिछड़े जिलों में आने वाले नवापुर तहसील के खांडबारा विकासखंड के 8 गांव में नाबार्ड के एक प्रोजेक्ट के जरिए सेवा समिति ने काम करना शुरू किया। छोटे 500 किसानों से आम और आंवले के पेड़ लगावाए गए। राष्ट्रीय नवोन्मेषी प्रकल्प के एक प्रोजेक्ट के माध्यम से एक दूसरे के कुँए से पानी साझा करना सिखाया गया। इतना ही नहीं खेतों में मिट्टी का कटाव रोकने के लिए फॉर्म बंडिंग की गई, जिसमें खेतों के ढालू मुहानों पर गहरे गड्ढे खोद पानी और मिट्टी के बहाव को रोका गया।

किसानों के बच्चों को पढ़ाने के लिए समिति दसवीं तक का रहवासी स्कूल चला रही है। अभी 500 जनजातीय बच्चे यहां अपने सुनहरे भविष्य की तस्वीर गढ़ रहे हैं। पानी के लिए सरकार की राह देखने के बजाय समिति ने किसानों को खुद मेहनत कर बांध बनाने की प्रेरणा दी। नेसु नदी के पानी पर छोटे–छोटे बांध बनाकर आठ गांव के किसानों ने नदी के पानी से अपने खेत सींचे। समिति के सचिव और पूर्व जिला कार्यवाह नितिन जी बताते हैं कि हर साल इसी नदी के किनारे दशहरे के अगले दिन नदी पूजन का कार्यक्रम होता है। जिसमें सैकड़ों गांव वाले भाग लेते हैं। अब तो सरकार ने यहां 17 पक्के बांध भी बनाए हैं। समिति ने किसानों की छोटी छोटी आवश्यकताओं की चिंता कर उन्हें पूरा करने

का काम बखूबी किया। उन्होंने देखा कि धान का छिलका निकालने के लिए किसानों को गुजरात जाना पड़ता है। इसमें काफी अधिक पैसा, श्रम और समय लग जाता है। इसलिए गांव में ही छिलका निकालने के लिए 13 गाँवों में 13 धान मिलें खोली एवम् उसका पैसा भी किसानों को सुविधा अनुसार चुकाने की छूट दी गई।

मजदूरी कर पेट पालने वालों को कुपोषण से बचाने के लिए घरों में सब्जी की खेती करना सिखाया गया। एक ही फसल होने से मिट्टी का कटाव काफी बड़े पैमाने पर होता था। इसके लिए गुंथों में भी सब्जी उगाई गई व क्रॉप केलैंडर बनाए।

टेटीबाई कुशल पावरा, इस महिला को एनआईसीआरए ने सबसे बढ़िया सब्जी बेचने के लिए पुरस्कृत किया, उन्हें ट्रेनिंग समिति के सहयोग से चल रहे कृषि विज्ञान केंद्र में मिली है।

पश्चिम क्षेत्र के क्षेत्र सेवा प्रमुख उपेंद्र कुलकर्णी जी कि मानें तो यह किसानों के स्थानांतरण व आत्महत्या के खिलाफ समिति की जंग थी, जिसे इन 12 गांवों में काफी हद तक विजय मिली है।

विश्व संवाद केन्द्र

मानवता की सफलता

मानवता भगवान् को अत्यन्त प्रिय है। इसी से स्वयं परात्पर ब्रह्म साक्षात् भगवान् श्रीराम तथा श्रीकृष्ण मानव रूप में ही अपनी दिव्य लीला करने के लिए लीलाधाम में प्रकट होते हैं और अपनी लीलामाधुरी से परमहंस मुनियों के मनों को मोहित करते, प्रेमी भक्तों को दिव्य रस का आस्वादन कराते, उनके प्रेमसुधार सका समास्वादन करते, साधु–पुरुषों का परित्राण करते, असाधुओं का विनाश कर उन्हें परमधाम पहुँचाते और धर्मग्लानि को मिटाकर धर्म का संस्थापन करते हुए अपनी मधुरलीला–कथा को जगत् के प्राणियों के उद्धार के लिये रखकर अन्तर्धान हो जाते हैं। मानवता के क्षेत्र में स्वयं भगवान् का अवतीर्ण होकर मानवता को धन्य करना भगवान् की मानव पर महान् कृपा का एक प्रत्यक्ष प्रमाण है। ये 'भगवान मानव' ही मानवता के परम आदर्श हैं। इनके चरित्रों का अनुकरण तथा इनकी वाणी का अनुसरण करने में ही मानव का परम कल्याण है तथा इसी में मानवता की सफलता है।

❐

व्रत-त्यौहार अप्रैल 2019

दिनांक	दिन	व्रत–त्योहार
1	सोमवार	पापमोचिनी एकादशी व्रत
2	मंगलवार	प्रदोष व्रत, बुढ़वा मंगल पर्व, महावारुणी पर्व।
3	बुधवार	मास शिवरात्रि व्रत
5	शुक्रवार	स्नान–दान की अमावस्या
6	शनिवार	वासंतीय नवरात्र प्रारंभ, कलश–स्थापन
7	रविवार	झूलेलाल जयंती
8	सोमवार	सौभाग्य सुन्दरी तीजव्रत, सरहुल
9	मंगलवार	वैनायकी गणेश चतुर्थीव्रत
11	गुरुवार	स्कन्द षष्ठी व्रत, सूर्यषष्ठी व्रत
12	शुक्रवार	महानिशा पूजा, अन्नपूर्णा
13	शनिवार	महाष्टमीव्रत, महानवमीव्रत श्रीरामनवमी, अन्नपूर्णा परिक्रमा
14	रविवार	मेष–सतुआ संक्रांति पुण्यकाल, खरमास समाप्त, वैशाखी पर्व, अम्बेडकर जयंती
15	सोमवार	कामदा एकादशी व्रत सबका
17	बुधवार	प्रदोषव्रत, महावीर जयंती – जैन
18	गुरुवार	व्रत की पूर्णिमा।
19	शुक्रवार	स्नान–दान पूर्णिमा, हनुमान प्राकट्योत्सव, गुड–फ्राइडे
21	रविवार	शबएबारात, ईस्टर सण्डे
22	सोमवार	सं. गणेशव्रत
27	शनिवार	श्रीशीतलाष्टमी व्रत, कालाष्टमी
30	मंगलवार	वरूथिनी एकादशी व्रत सबका, बल्लभाचार्य जयन्ती

सेवा हि परमोधर्मः

पॉवर ग्रिड, विश्राम सदन, नई दिल्ली

लाभार्थी संख्या विवरण

फरवरी 2019

		माह फरवरी 2019
1	असम	2
2	बिहार	347
3	छत्तीसगढ़	6
4	दिल्ली	12
5	हरियाणा	23
6	हिमाचल प्रदेश	9
7	जम्मू	28
8	झारखंड	51
9	केरल	4
10	मध्य प्रदेश	96
11	उड़ीसा	5
12	राजस्थान	360
13	त्रिपुरा	4
14	उत्तरांचल	20
15	उत्तर प्रदेश	264
16	वेस्ट बंगाल	37
17	नेपाल	15
	कुल सदस्यों की संख्या	959

पावन स्मृति

{पुण्य भूमि भारत में जन्म लेकर जिन्होंने जीवन पर्यन्त मानव की सेवा और मानवता की रक्षा में अपना सर्वस्व समर्पित कर कीर्तिमान स्थापित किया, अपने बहुआयामी कार्यो द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में आलोक स्तम्भ बनकर हमारा मार्गदर्शन किया तथा जो आज भी हमारे प्रेरणा स्रोत हैं ऐसे उन तमाम दिव्य महापुरूषों की पावन स्मृति में श्रद्धा सुमन समर्पित है–सम्पादक}

दिनांक	दिवस	महापुरुष का नाम
1 अप्रैल	जन्म–दिवस	संघ संस्थापक : डा0 हेडगेवार
1 अप्रैल	पुण्य–तिथि	निर्धनों का वास्तुकार : लारी बेकर
2 अप्रैल	पुण्य–तिथि	भारतीय क्रिकेट के नायक : रणजी
3 अप्रैल	जन्म–दिवस	सांस्कृतिक प्रेरणा पुरूष : लालचन्द्र प्रार्थी
4 अप्रैल	जन्म–दिवस	राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी
6 अप्रैल	इतिहास–स्मृति	तीन उँगली कटाकर भागा
8 अप्रैल	बलिदान–दिवस	मंगल पाण्डे का बलिदान
9 अप्रैल	जन्म–तिथि	घुमक्कड़ साहित्यकार राहुल सांस्कृत्यायन
10 अप्रैल	स्थापना–दिवस	आर्य समाज की स्थापना
11 अप्रैल	बलिदान–दिवस	वीर खाज्या एवं दौलतसिंह नायक
13 अप्रैल	जन्म–दिवस	कृषि वैज्ञानिक सर गंगाराम
13 अप्रैल	इतिहास–स्मृति	अनुपम क्रान्तितीर्थ : जलियाँवाला बाग
14 अप्रैल	जन्म–दिवस	संविधान के निर्माता : डा0 अम्बेडकर
14 अप्रैल	इतिहास–स्मृति	मोइरांग : जहाँ नेताजी ने तिरंगा फहराया
15 अप्रैल	पुण्य–तिथि	जयप्रकाश नारायण की अर्द्धांगिनी : प्रभावती जी
16 अप्रैल	पुण्य–तिथि	प्रकृति के अनुपम चितेरे : नन्दलाल बोस
17 अप्रैल	बलिदान–दिवस	अमर बलिदानी : तात्याटोपे
18 अप्रैल	बलिदान–दिवस	अमर बलिदानी : दामोदर हरि चाफेकर
18 अप्रैल	पुण्य–तिथि	बंगाल में राष्ट्रीय शिक्षा के प्रसारक सतीशचन्द्र मुखोपाध्याय
19 अप्रैल	जन्म–दिवस	तपस्वी शिक्षाविद : महात्मा हंसराज
19 अप्रैल	बलिदान–दिवस	युवा बलिदानी : अनन्त कान्हेरे
20 अप्रैल	जन्म–दिवस	उड़नपरी पी.टी. उषा
21 अप्रैल	बलिदान–दिवस	गणपतराय का बलिदान
22 अप्रैल	पुण्य–तिथि	क्रान्ति और सेवा के राही : योगेश चन्द्र चटर्जी
23 अप्रैल	जन्म–दिवस	विद्वत्ता की प्रतिमूर्ति पण्डिता रमाबाई
24 अप्रैल	पुण्य–तिथि	प्रेम के उपासक : रमण महर्षि
26 अप्रैल	जन्म–तिथि	डी.ए.वी. कालेज के सूत्रधार : पण्डित गुरूदत्त विद्यार्थी
28 अप्रैल	बलिदान–दिवस	क्रान्ति पुरोधा : जोधासिंह अटैया
29 अप्रैल	जन्म–तिथि	अद्भुत चित्रकार : राजा रवि वर्मा
30 अप्रैल	जन्म–दिवस	भारतीय फिल्मों के पितामह : दादासाहब फाल्के
30 अप्रैल	बलिदान–दिवस	अद्भुत योद्धा : हरिसिंह नलवा

पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्वास्थ्य सेवा केन्द्र

ग्राम परतोष, अमेठी (उ.प्र.)

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सेवा हि परमो धर्मः

अनुरोध

जिनकी कथनी और करनी में सदैव एकरूपता रही हो, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मातृभूमि के चरणों में अर्पित कर दिया हो, जो अकृत्रिमता से दूर, सहज, स्वाभाविक, सादा रहन-सहन और उच्च विचारों के धनी रहे हों, ऐसे समाज सेवी, कुशल संगठक, राष्ट्रभक्त श्रद्धेय पं. दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितम्बर 1916 ई. को नगला चन्द्रभान, फरह, मथुरा (उ.प्र.) में हुआ था। बाल्यकाल से ही वे संवेदनशील रहे। उनके हृदय में समाज के निर्बल, पिछड़े, बनवासी, ग्रामीण, अनाश्रित, वृद्ध, अनपढ़-बालक, रोगी-पीड़ित सभी के प्रति मानवीय करुणा थी, उनके एकात्म मानव दर्शन और अन्त्योदय की भावना तथा समाज और राष्ट्र को समुन्नत करने के स्वप्न को साकार बनाने तथा आगे बढ़ाने की पवित्र भावना के साथ पंडित दीनदयाल जी की जन्मशती पर उनके प्रति आदर-सम्मान व्यक्त करने के लिए ग्राम परतोष, जिला अमेठी में पं. दीनदयाल उपाध्याय स्वास्थ्य सेवा केन्द्र की स्थापना का निर्णय लिया गया। इस निमित्त 20400 वर्गफुट जमीन क्रय कर ली गई है। अगला महत्त्वपूर्ण चरण निर्माण कार्य का है, जिसके लिए सहयोगी बन्धुओं से आर्थिक सहकार प्राप्त हो रहे हैं। इस महान यज्ञ कार्य में आहुति के लिए आप भी अपने सहकार से अनुगृहीत करें, यही आपसे विनती और प्रार्थना है।

कृपया अपनी सहयोग राशि भाऊराव देवरस सेवा न्यास के पक्ष में चेक/ड्राफ्ट जो लखनऊ में देय हो, भेजने की कृपा करें। अथवा RTGS/NEFT के लिए Bhaorao Deoras Seva Nyas A/c No. 30448433657 State Bank of India, Daliganj (Niralanagar) Lucknow (IFSC Code: SBIN0003813) में धनराशि जमा कराकर अपने पैन नं. एवं पते के साथ कार्यालय के पते (सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020 दूरभाष 0522-4001837 मो. 9450020514) पर हमें सूचित करें।

– राजेश (संयोजक)

मो. 9793120738

भाऊराव देवरस सेवा न्यास को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5)(vi) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। न्यास का PAN AAATB1049G है।

दान की परम्परा चलती रहे

अपने पास धन हो तो उसमें से किसी निर्धन की सहायता कर देना कोई उदार–हृदय व्यक्ति का ही कार्य हो सकता है। यह भी समाज सेवा का एक रूप है। इसे परोपकार भी कह सकते हैं पर हो वह उदार वृत्ति ही। भिखारी को दरवाजे से एक मुट्ठी अनाज देकर भगा देना महत्वपूर्ण नहीं, पर किसी को ऐसी आर्थिक सहायता कर देना जिससे उसकी आजीविका की समस्या हल हो जाय, यह पुण्य की, परमार्थ की बात है।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने एक भिखारी बालक को एक रुपया देकर रोजगार में लगाया था, कुछ दिन में वही व्यक्ति वर्दवान का एक बड़ा साहूकार बना। भिक्षा–जीवन यापन करने से बचाकर विद्यासागर ने उस व्यक्ति को जो नई राह दी उसके लिये वह जीवन–भर उनका कृतज्ञ बना रहा। साथ ही उसके हृदय में भी परोपकार की भावना क्रियाशील रही।

शीत से सिहरते हुये व्यक्ति को थोड़े से कपड़े देकर कष्ट से बचा देना, भूखे को भोजन करा देना, अन्धे को घर तक पहुँचा आना, रोगी की सेवा यह सब मनुष्यता के परिचायक चिह्न हैं। सहृदय व्यक्तियों द्वारा इस तरह से दान की पुण्य परम्परा चलती रहती है और उससे समाज का कुछ भला हो जाता है। यह क्रम सदैव चलते रहना चाहिये, इससे मनुष्य, मनुष्य के बीच आत्मीयता के बन्धन प्रगाढ़ होते हैं। सत्कर्म की प्रेरणायें जागृत होती हैं।

विक्टर ह्यूगो का कथन है कि धन देकर अपनी थैली खाली कर दीजिये, आपका दिल भर जायगा। धन उन सब वस्तुओं का बोधक है जिससे किसी के अभावों की पूर्ति हो। जिस वस्तु के न मिलने से एक व्यक्ति दुःख पा रहा है वह वस्तु उसे बिना मूल्य दे देना दान कहलाता है। इससे मनुष्य में विनम्रता आती है, सद्गुणों का विकास होता है। दान कोई विवेक–विहीन क्रिया नहीं है। वेद की आज्ञा है–

शत हस्त समाहर–सहस्र हस्त संकिर।

अर्थात् –ऐ मनुष्यों, सैकड़ों हाथों से कमाओ और हजार हाथों से उसे दान कर दो।

"आदानं हि विसर्गाय सताँ वारि मुचामिव।" जिस तरह बादल पृथ्वी से जल लेकर फिर उसी में बरसा देते हैं, सज्जनों को भी उसी तरह दान करते रहना चाहिये। भावनापूर्वक दान की हुई वस्तु यज्ञ के समान होती है, उसका सैकड़ों गुना लाभ कालान्तर में मिलता है और दाता के अन्तःकरण में तृप्ति की वृष्टि करता है।

धार्मिक कृत्यों की पूर्णाहुति पर सत्पात्रों को दक्षिणा देने का विधान है। शास्त्रकार का यहाँ कोई ऐसा भाव नहीं रहा कि दान किसी व्यवसाय का रूप धारण कर ले या वह कोई अन्ध–परम्परा बने वरन् यह क्रिया धर्म की सजावट उसकी पूर्णता की दृष्टि से सम्बद्ध की गई है। लोगों की धार्मिक वृत्तियाँ संकुचित न रहें इस दृष्टि से सब कुछ होम कर देने के बाद भी और त्याग करने की भावना विद्यमान रहनी चाहिये। दान, दक्षिणा इसी भावना का प्रतीक है।

साधनों की बहुतायत का लाभ दूसरों को देना मनुष्य की श्रेष्ठता का लक्षण है। अपने स्वार्थों तक ही सीमित रहने का भाव छोटेपन की निशानी है। सज्जन पुरुष अपनी सुविधाओं का एक अंश उदारतापूर्वक दूसरों को देकर अपना बड़प्पन स्थिर रखते हैं। समाज की सुव्यवस्था और प्रगतिशील साम्यवाद की दृष्टि से ऐसी प्रक्रियायें समाज में चलती रहनी चाहिए। सन्त कबीर की कहावत प्रसिद्ध है–

जो जल बाढ़ै नाव में घर में बाढ़ै दाम।
दोनों हाथ उलीचिये यही सयानो काम।।

"दान से दुर्गति का नाश होता है" यह शब्द यों सार्थक होते हैं कि जब भी किसी को कुछ देने की बात मन में आती है तो उसके साथ ही दया और करुणा के, आत्मीयता और सहानुभूति के भाव भी जागृत होते हैं। भावनाओं का यह परिष्कार आत्म–विकास की आवश्यक शर्त है, जो दान की परम्परा के साथ बड़ी सजीवता से जागृत होती है। दान से दोनों पक्षों को समान सुख मिलता और आत्म–भाव का आदान–प्रदान होता है। सद्भावनायें अन्तःकरण को शीतल रखती हैं और

उस पर दुष्प्रवृत्तियों का सहसा आक्रमण नहीं होता। दान देना यह इंगित करता है कि हमारे अन्दर का देव भाग प्रचुर मात्रा में क्रियाशील है, इस स्थिति में पाप और पतन से घबड़ाने की आवश्यकता नहीं होती। मनुष्य निर्भय रहता है।

मनुष्य के जीवन में आत्म–दर्शन का एक पहलू होता है अपनी बुराइयों से संघर्ष करना। यह ध्वंसात्मक स्थिति है इसलिये कुविचारों पर विजय हो जाने पर भी शक्ति का एक अंश अनावश्यक व्यय हो जाता है। प्रायश्चित में शक्ति और चेष्टायें दोनों प्रयुक्त होते हैं। दान इसका रचनात्मक पहलू है और उससे मनोविकारों से सहज ही निवृत्ति हो जाती है।

मनुष्य जीवन को सार्थक करने में दान का असाधारण महत्व है इससे कोई इनकार नहीं कर सकता। जब तक समाज जीवित है तब तक यह प्रक्रिया किसी न किसी रूप में अवश्य जीवित रहेगी पर अब दान देने और लेने की प्रवृत्तियाँ कुछ दूषित हो चली हैं इसलिये न तो देने वालों को ही कुछ आत्म–सन्तोष होता है और न पाने वालों का उपकार होता है। कारण एक ही है पात्रता का अभाव। न देने वाले ही भावनापूर्वक देते हैं और न पाने वाले ही उसके अधिकारी रह गये हैं। दान का अर्थ अब भावनात्मक परिष्कार न रहकर स्वर्ग और मुक्ति की प्राप्ति अथवा प्रदर्शन की भावना मात्र रह गई है। दान लेने का अधिकार समाज सेवी या अशक्त व्यक्तियों को रहा है पर अब यह क्षेत्र भी पवित्र नहीं रहा। दान ने अब भीख माँगने का रूप ले लिया। शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ, पर अकर्मण्य और आलसी व्यक्ति ही दान ले रहे हैं। इस तरह दुष्प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन मिलता है। तात्पर्य यह है कि दान का सात्विक उद्देश्य इन दिनों किसी भी क्षेत्र में पूरा होता नहीं जान पड़ता। सब तरफ विकृति दिखाई दे रही है।

पूर्वकाल में समाज–सेवी व्यक्ति धर्म शिक्षण का कार्य करते थे। उन्हें ब्राह्मण कहते थे। ये लोग तपश्चर्या की अग्नि में तपकर अनुभव सिद्ध, गुणी, चरित्रवान् और ज्ञानी होते थे। समाज विकारग्रस्त न होने पाये इसलिये सन्मार्ग का उपदेश देना ही उनका लक्ष्य होता था। यह लोग निरन्तर ज्ञान दान करते थे और उसका प्रभाव यह होता था कि समाज बुराइयों से बचा रहता था और उसमें सतोगुणी प्रवृत्तियाँ चलती रहती थीं। यह दान मनुष्य का वास्तविक कल्याण करने वाला होता था इसलिये ऐसे व्यक्तियों को समाज में अधिक सम्मान की दृष्टि से जाता देखा था और उनके जीवनयापन का भार लोग खुशी–खुशी वहन कर लेते थे।

इस युग में ज्ञान की बड़ी आवश्यकता है। स्थूल दान का महत्व अब इसलिये कम हो गया है कि उनमें पात्र–कुपात्र का अन्दाज नहीं होता पर ज्ञान की आवश्यकता अच्छे–बुरे हर व्यक्ति के लिये है। उससे किसी का अहित नहीं हो सकता और न ही उस दान का दुरुपयोग किया जा सकता है।

ज्ञान मनुष्य के सर्वतोमुखी विकास का साधन है। समाज में ज्ञानवान् व्यक्ति अधिक सुखी और सन्तुष्ट समझे जाते हैं। समाज का एक वर्ग इस तरह का हो और दूसरा मूढ़ताग्रस्त हो तो वह समाज दुःखी समाज होगा। ज्ञान का उद्देश्य मानव मात्र को एक स्तर पर लाना है। यह कार्य निःसन्देह कुछ कठिन है पर इसका महत्व अत्यधिक है। आज की स्थिति में सर्वोच्च दान "ज्ञान" का मानें तो वह सर्वथा उपयुक्त ही होगा।

मनुष्यों पर ऋषियों का भी एक ऋण है। ऋषि का अर्थ है वेद। वेद अर्थात् ज्ञान। आज का हमारा जो विकास हुआ है उसका श्रेय ज्ञान को है, ऋषियों को है। जिस तरह हम यह ज्ञान दूसरों से ग्रहण कर विकसित हुये हैं उसी तरह अपने ज्ञान का लाभ औरों को भी देना चाहिये। यह हर विचारशील व्यक्ति का कर्तव्य है कि वे समाज के विकास में अपने ज्ञान का जितना अंश दान कर सकते हों वह अवश्य करना चाहिये।

ज्ञान–दान मनुष्य को सन्मार्ग की ओर ले जाने के लिये किया जाता है इसलिये यह अन्य दानों की अपेक्षा अधिक सार्थक होता है।

जो प्रत्यक्ष या परोक्ष, विचार, वाणी या सत्साहित्य पढ़ाकर दूसरों को ऊँचे उठाने का प्रयत्न करते हैं वे सच्चे अर्थों में ब्राह्मण हैं, उन्हीं के दान को सर्वश्रेष्ठ दान कहेंगे। आज इसी दान की विश्व को आवश्यकता है। ❐

समाचार

हिन्दू समाज की परम्पराओं व आस्थाओं के रक्षण की आवश्यकता

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा, ग्वालियर
फाल्गुन शु. 2-4 युगाब्द 5120, 8-10 मार्च 2019

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा का यह सुविचारित मत है कि अभारतीय दृष्टिकोण के आधार पर हिन्दू आस्था और परम्पराओं को आहत एवं इनका अनादर करने का एक योजनाबद्ध षड्यंत्र निहित स्वार्थी तत्त्वों द्वारा चलता आ रहा है। शबरीमला मंदिर प्रकरण इसी षड्यंत्र का नवीनतम उदाहरण है।

हिंदुत्व ईश्वर के एक ही स्वरूप अथवा पूजा पद्धति को स्वीकारने तथा अन्यों को नकारने वाला विचार नहीं है, अपितु संस्कृति के विविध विशेष रूपों में अभिव्यक्त होने वाला जीवन दर्शन है। इसका अनूठापन विविध पूजा पद्धतियों, स्थानीय परम्पराओं व उत्सव,आयोजनों से प्रकट होता है। हमारी परम्पराओं में विद्यमान विविधता के सौंदर्य पर नीरस एकरूपता को थोपना असंगत है।

हिन्दू समाज ने अपनी प्रथाओं में काल और आवश्यकता के अनुरूप सुधारों का सदैव स्वागत किया है, परन्तु ऐसा कोई भी प्रयास सामाजिक, धार्मिक तथा आध्यात्मिक नेतृत्व के मार्गदर्शन में ही होता रहा है और आम सहमति के मार्ग को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती रही है। केवल विधिक प्रक्रियाएँ नहीं, अपितु स्थानीय परम्पराएँ व स्वीकृति सामाजिक व्यवहार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

सम्पूर्ण हिन्दू समाज आज एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति का सामना कर रहा है। केरल की सत्तारूढ़ वाम मोर्चा सरकार, माननीय उच्चतम न्यायालय की संविधान पीठ द्वारा पवित्र शबरीमला मंदिर में सभी आयुवर्ग की महिलाओं को प्रवेश के आदेश को लागू करने की आड़ में हिन्दुओं की भावनाओं को कुचल रही है।

शबरीमला की परंपरा देवता और उनके भक्तों के बीच में अनूठे संबंधों पर आधारित है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि न्यायालय ने निर्णय तक पहुँचते हुए सैंकड़ों वर्षों से चली आ रही समाज स्वीकृत परंपरा की प्रकृति और पृष्ठभूमि का विचार नहीं किया; धार्मिक परम्पराओं के प्रमुखों के विचार जाने नहीं गए; महिला भक्तों की भावनाओं की भी अनदेखी की गई। समग्र विचार के अभाव में स्थानीय समुदायों द्वारा सदियों से स्थापित, संरक्षित और संवर्धित वैविध्यपूर्ण परम्पराओं को इससे ठेस पहुँची है।

केरल की मार्क्सवादी नीत सरकार के कार्यकलापों ने अय्यप्पा भक्तों में मानसिक तनाव उत्पन्न कर दिया है। नास्तिक, अतिवादी वामपंथी महिला कार्यकर्ताओं को पीछे के दरवाजे से मंदिर में प्रवेश करवाने के राज्य सरकार के प्रयत्नों ने भक्तों की भावनाओं को बहुत आहत किया है।

सीपीएम अपने क्षुद्र राजनैतिक लाभ एवं हिन्दू समाज के विरुद्ध वैचारिक युद्ध का एक अन्य मोर्चा खोलने के लिए यह कर रही है। यही कारण है कि अय्यप्पा भक्तों, विशेषकर महिला भक्तों द्वारा अपनी धार्मिक स्वतंत्रताओं और अधिकारों की रक्षा के लिए एक स्वतःस्फूर्त और अभूतपूर्व आन्दोलन उठ खड़ा हुआ।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा सभी भक्तों की सामूहिक भावनाओं का हृदयपूर्वक सम्मान करती है और मंदिर परम्पराओं की रक्षा हेतु संयम तथा शालीनता से संघर्षरत रहने का आह्वान करती है। प्रतिनिधि सभा केरल सरकार से आग्रह करती है कि श्रद्धालुओं की आस्था, भावना तथा लोकतांत्रिक अधिकारों का आदर करे और अपनी ही जनता पर अत्याचार न करें। प्रतिनिधि सभा आशा करती है कि उच्चतम न्यायालय इस विषय में दायर पुनर्विचार व अन्य याचिकाओं पर सुनवाई करते समय इन सब पहलुओं का समग्रतापूर्वक विचार करेगा। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा देश के लोगों से शबरीमला बचाओ आन्दोलन को हर प्रकार से समर्थन देने का आह्वान करती है।

पता– गायत्री परिवर शांतिकुंज, हरिद्वार

दुर्गा के नौ (9) स्वरूपों की पूजा

।। ऊँ नमश्चण्डिकायै।।

भारत भूमि एक पवित्र संस्कृति से सम्पन्न कर्म भूमि ही नहीं, बल्कि देव भूमि भी है, जहाँ देवी–देवताओं के अवतरण की कई महत्वपूर्ण पौराणिक कथाएं सुविख्यात हैं। सम्पर्ण विश्व, सूर्यादि ग्रह, नक्षत्र तथा पंच तत्व सहित नाना विधि संसार सत्ता के सर्वोपरि इच्छा द्वारा ही चलायमान हैं। यह ध्रुव सत्य है कि बिना सर्वोपरि शक्ति (परमब्रह्म) की इच्छा के कुछ भी संभव नहीं है। आज भले ही आधुनिकता की चकाचौंध में कुछ लोग अपनी अज्ञानता को बलपूर्वक थोपने की कोशिशें कर हों, कि देवी–देवता नाम की कोई सत्ता व ताकत नहीं हैं। किन्तु यह सच है कि कहीं न कहीं उन्हें सर्वोपरि सत्ता का एहसास जरूर होता है। हिन्दू धर्म को सनातन धर्म भी कहा जाता है, जो आदि काल से है, जिसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के उत्पत्ति व उसके विस्तार की विशुद्ध जानकारी प्राप्ति होती है, हमारे पौराणिक व वैदिक धर्म ग्रंथ इस बात के गवाह हैं, जब–जब धरा में धर्म की क्षति होती है तथा दुराचार, अपराध, रूपी असुरों की वृद्धि होती हैं। तो भगवान विभिन्न शरीरों में उत्पन्न होकर उनका संहार करके सज्जनों की पीड़ा हरते हैं और धर्म को स्थापित करते हैं।

इसी प्रकार जब महिषासुरादि दैत्यों के अत्याचार से समस्त भू व देव लोक पीडित हो उठा तो परम पिता परमेश्वर की आज्ञा से देव गणों ने एक अद्भुत अजेय शक्ति का सृजन किया, तथा उसे नाना विधि अमोघ अस्त्र–शस्त्र प्रदान कर उसे अजेय और जन कल्याणकारी बना दिया। जो आदि शक्ति माँ जगदम्बा के नाम से अखिल ब्रह्माण्ड में सुविख्यात हुईं। माँ दुर्गा देव व भू लोक की न केवल रक्षक हैं, अपितु सभी के लिए वांछित कल्पतरू के रूप में हैं। शिव व शक्ति की परम कल्याणकारी कथाओं का अति मनोरम वर्णन देवी भागवत, सूर्य, शिव, श्रीमद्भागवत आदि पुराणों मे हैं। बिना शाक्ति की इच्छा के इस संसार में एक कण भी नहीं हिल सकता सर्वज्ञ द्रष्टा भगवान शिव भी (इ की मात्रा, शक्ति) के हटते ही शव (मुर्दा) स्वरूप हो जाते हैं। भगवती दुर्गा ने नौ दिनों में जयंती, मंगलाकाली, भद्रकालीकपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा, स्वधा में प्रकट होकर अहंकार में डूबें हुए शुम्भ–निशुम्भ, महिषासुर, रक्तबीज, जैसे अनेकों दैत्यों का वध कर देवताओं को उनका यज्ञ भाग पुनः दिलाया तथा भू व देव लोक में धर्म की स्थापना कर मानव का परम कल्याण किया।

हमारे शुभेच्छ वैदिक ऋषियों ने कल्याण प्राप्त करने हेतु मानव को इच्छित फल हेतु माँ दुर्गा की पूजा अर्चना का क्रम बताया है, जिसमें राजा सुरथ से महर्षि मेधाने कहा था आप उन्हीं भगवती की शरण ग्रहण कीजिए जो आराधना से प्रसन्न होकर मनुष्यों को भोग, स्वर्ग और मोक्ष प्रदान करती हैं। इसी अनुसार अर्चना करके राजा सुरथ ने अखण्ड

साम्राज्य प्राप्त किया। जब से देवताओं ने अपने तप व तेज का संग्रह करके अद्भुत दिव्य रूपी माँ दुर्गा को अवतरित किया तब से आज तक अनगिनत लोगों नें माँ दुर्गा की अर्चना करके मनोवांछित फल को प्राप्त किया। मनुष्य क्या? माँ दुर्गा की अर्चना तो देव समूह भी करते हैं। साक्षात प्रभु श्रीराम ने भी जगज्जननी भगवती की आराधना नवरात्रों के विशेष पर्व मे कर दुष्ट रावण का वध किया था।

सम्पूर्ण भारत में चौत्र शुक्ल प्रतिपदा तथा आश्विन शुक्ल प्रतिपदा को प्रतिवर्ष नवरात्रि के पर्व को भगवती की आराधना करके मानाया जाता हैं। जिसे वसन्त और शरदीय नवरात्रा भी कहते हैं। इसके अतिरिक्त दो गुप्त नवरात्रे भी होते हैं कुल मिलाकर वर्ष भर में चार महत्वपूर्ण पर्व दुर्गा अर्चना के होते हैं। शरद् ऋतु का आगमन कृषि प्रधान भारत देश के लिए एक उत्सव के समान हैं। इन दिनों रवी की फसलों की बुआई का प्रारम्भ हो जाता है तथा खरीफ की फसल भी समृद्धि (धान्य) की सूचना देती है। जिससे कृषक वर्ग सहित समूचा भारतवर्ष प्रसन्न होकर परम कल्याणकारी शक्ति स्रोत माँ जगज्जननी की नौ दिन पर्यन्त वैदिक रीति से आराधना करता है। जिसके कारण इसे नौ रात्रि कहा जाता है, जिसके फलस्वरूप मानव दुःख, दरिद्रता, रोग, बाधाओं से मुक्त हो जाता है और मनोवांछित फल प्राप्त करता है।

माँ "जगज्जननी की अर्चना का सबसे प्रामाणिक व श्रेष्ठ ग्रन्थ "दुर्गा सप्तशती" है। जिसमें सात सौ श्लोकों के माध्यम से देवी से प्रार्थना की गई है, इस पाठ के प्रभाव मात्र से माँ साधकों को इच्छित फल देती हैं। ऐसे साधकों को जिनके पास कम समय हैं या वे स्वतः ही कम समय में पाठ सम्पन्न करना चाहते हैं तो सात सौ श्लोकों के स्थान पर "सप्तश्लोकी दुर्गा" का पाठ करके मनोवांछित फल हासिल कर सकते हैं। हम आदि शक्ति की आराधना वैदिक विधि से सम्पन्न कर अपने मनोवांछित फल को प्राप्त कर सकते हैं।

नवरात्रि में यज्ञादि के उपरान्त कन्या पूजन और उनको भोजन कराने की व्यवस्था भी हैं। हमें श्रद्वा भक्ति के साथ कन्या पूजन करना चाहिए। इसी तरह दैनिक जीवन में भी कन्याओं का सदा सर्वदा सम्मान करना चाहिए।

आध्यात्मिक सुख का महत्व

मानव–जीवन की सार्थकता और कृतकृत्यता आध्यात्मिक सुख–शान्ति में है। उसके लिये सदैव जागरूक रहना चाहिये। चित्त का संशोधन अनेक उपायों से करना चाहिये। परदोष, पर निन्दा, परस्वापहरण की भावनाओं से, जो आज मानव को दानव बना रही है, बचना चाहिए। असत्य भाषण का अवरोध और सत्य भाषण की चेष्टा सदैव करनी चाहिए, तभी मनुष्य अपने लक्ष्य की पूर्ति कर सकता है और मानव–शरीर की सफलता प्राप्त कर सकता है। अन्यथा–'तस्यामृतं क्षरति हस्तगतं प्रमादात्।' के अनुसार मानव अमृत के हस्तगत घट को अपने हाथ से गिराकर प्रमाद का परिचय देगा। अतः आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति के लिये सदैव प्रयत्न करना चाहिए।

Om Prakash Srivastava

सेवा संवाद

के

के सफल प्रकाशन

हेतु

हार्दिक शुभकामनाएं

C-249, INDIRA NAGAR, LUCKNOW.

सामाजिक सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु

भाऊराव देवरस सेवा-सम्मान

से सम्मानित होने वाले

सेवाव्रती महानुभाव

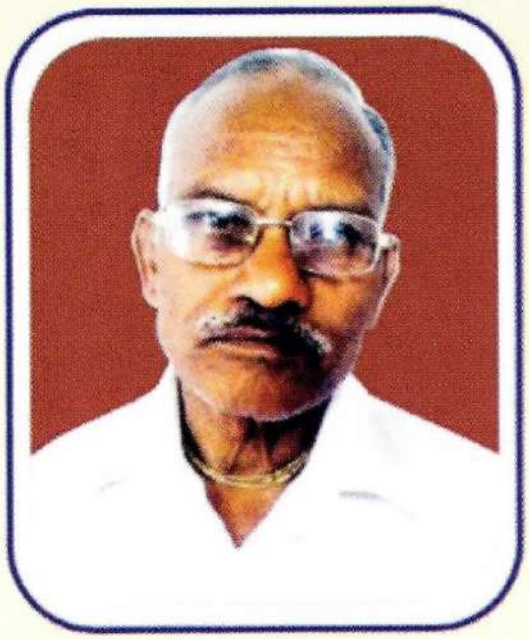

श्री विश्वनाथ प्रधान
कन्धमाल (उड़ीसा)

वनवासी कल्याण आश्रम के माध्यम से
(वनवासी बन्धुओं के उत्थान
हेतु समर्पित जीवन)

श्री पुरुषोत्तम पाडुरंग कामत
बार्देश (गोवा)

(मातृभाषा कोकणीं व मराठी के
उत्थान हेतु समर्पित जीवन)

RNI No. UPHIN/2005/15853
सेवा संवाद अप्रैल 2019

डाक पंजीकरण क्र. SSP/LW/NP-136/2019-21
प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ

कैलेण्डर वर्ष 2019–21
प्रेषण तिथि– प्रत्येक माह 26 व 30

40

कुल मुद्रित पृ. की सं. 40

श्रद्धेय भाऊराव देवरस जन्मशती वर्ष

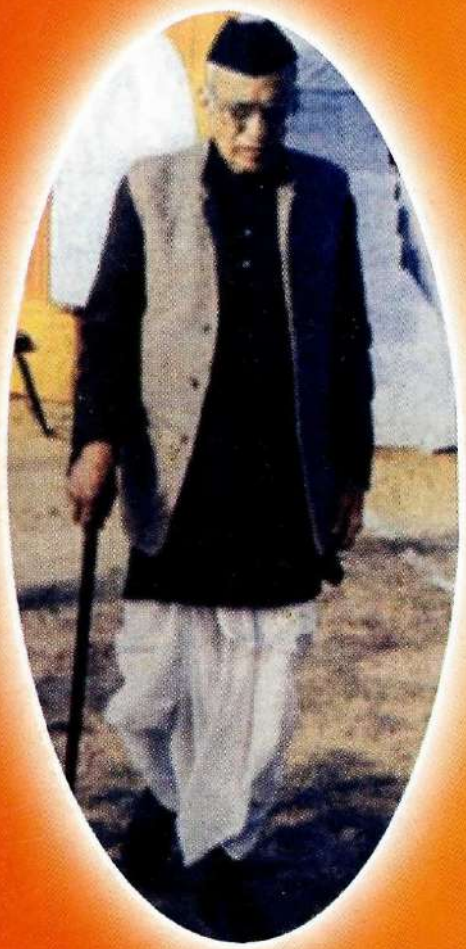

भा. भाउक परम उदार मन,
शुद्ध, बुद्ध, चैतन्य ।

ऊ. ऊर्जा से भरपूर तुम,
राव देवरस धन्य ।।

रा. राम सरिस गम्भीर प्रिय,
सेवा के आदर्श।

व. वक्ता-श्रोता सुचिन्तक,
परहित करत विमर्श।।

दे. देश-धर्महित जागरण,
और मनुज निर्माण।

व. वन-गिरिजन रक्षार्थ तुम,
साधक परम प्रमाण।।

र. रसमय सरस समाज-हित,
हे ! प्रतिभा सम्पन्न।

स. सत्य-समर्पण मार्ग पर,
कभी न हुए विपन्न।।

**जन-जन के उर में बसा, जिनका उत्तम नाम।
ऐसे भाऊ राव को, शत-शत नमन-प्रणाम।।**

डॉ० शिवभूषण त्रिपाठी

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल द्वारा भाऊराव देवरस न्यास, सी–91, निरालानगर, लखनऊ (उ.प्र.) के लिए बर्फानी इण्टरप्राइजेज, ए–1, गोविन्दा बिल्डिंग, शाहनजफ रोड, हजरतगंज, लखनऊ, से मुद्रित। सम्पादक : डॉ शिवभूषण त्रिपाठी